संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -316 मंगलवार ,17 सितम्बर 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

देश की संक्षिप्त खबरें

पीएम नरेंद्र मोदी ने मिलाद-उन-नबी पर देशवासियों की दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024(ए)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को मिलाद-उन-नबी के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं और सभी के लिए सुख एवं समृद्धि की कामना की। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ईद मुबारक ! मिलाद-उन-नबी के अवसर पर शुभकामनाएं। सद्भाव और एकजुटता हमेशा बनी रहे। चारों ओर सुख और समृद्धि हो। मिलाद-उन-नबी को पैगंबर मोहम्मद के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है और मुस्लिम समुदाय में इस दिन को बहुत पाक माना जाता है।

पिता ने अपने बेटे की मन्नत पूरी होने पर नोटों से तौलकर मंदिर को दान कर दिया

उज्जैन,16 सितम्बर 2024(ए)। मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के बड़नगर में एक अनोखी घटना सामने आई है, जहां एक पिता ने अपने बेटे की मन्नत पूरी होने पर उसे 10 लाख से अधिक की राशि के नोटों से तौलकर मंदिर को दान कर दिया।इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। बड़नगर निवासी भगवान जाट ने 4 साल पहले अपने बेटे वीरेन जाट (30) के लिए एक मन्नत मांगी थी, जो अब पूरी हो गई। मन्नत पूरी होने पर उन्होंने अपने बेटे का वजन 82 किलो के बराबर 10 लाख रुपए से अधिक की गड्डियों से तौला और पूरी राशि तेजाजी महाराज मंदिर के निर्माण कार्य के लिए दान कर दी।

छात्र ने दी जान,पूरे देश में एआईआर-1 रैंक था हासिल

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024(ए)। दिल्ली के मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के एक छात्र के सुसाइड करने का मामला सामने आया है. 25 वर्षीय छात्र नवदीप सिंह ने रविवार रात अपने पारसी अंजुमन गेस्ट हाउस में फांसी लगा ली। नवदीप ने साल 2017 में मेडिकल एंट्रेंस एग्जाम नीट यूजी में पूरे देश में एआई आर-1 रैंक हासिल की थी। फिलहाल रेडियोलॉजी में पोस्टग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहा था। साल 2017 में राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा में नवदीप सिंह ने 697 अंकों के साथ पहली रैंक हासिल की थी। आज दोपहर मुक्तसर, पंजाब में उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा। दिल्ली पुलिस की शुरुआती जांच में छात्र आत्महत्या का मामला लग रहा है। हालांकि अभी तक छात्र के पास कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है. पुलिस मामले की जांच कर रही है। छात्र के पिता गोपाल सिंह पंजाब के मुक्तसर जिले के सरायनागा गांव में सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्रिंसिपल हैं। जांच के बाद उनके कमरे को सील कर दिया गया है। पुलिस ने छात्र के मोबाइल कब्जे में लेकर जांच के लिए फॉरेंसिक टीम के पास भेज दिया है। आत्महत्या की वजहों का पता नहीं चल सका है। पुलिस उनके साथियों से पूछताछ कर रही है।

इंसाफ के इंतजार में हैं ये केस

» सुप्रीम कोर्ट ने जांच एजेंसी को फटकारा

» क्या अदालतों के हस्तक्षेप से खुले घूम रहे अपराधी

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024(ए)। कानूनी कहावत है कि न्याय में देरी न्याय से वंचित करने के समान है। हाल में मनीष सिसोदिया की जमानत पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने ट्रायल में देरी को लेकर जांच एजेंसी पर कड़ी टिप्पणी करते हुए इस आधार पर जमानत दे दी कि 17 महीने बाद भी मामले में ट्रायल शुरू नहीं हुआ है।सच्चाई यह है कि सभी मामलों में ट्रायल में देरी के लिए सिर्फ जांच एजेंसियों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। बड़ी संख्या में ऐसे मामले भी हैं, जिनमें हाईकोर्ट या सुप्रीम कोर्ट के हस्तक्षेप के कारण वर्षों तक ट्रायल शुरू नहीं हो पाया और आरोपी जमानत पर घूमता रहा। कई मामले राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण अदालती प्रक्रिया के बीच में ही दम तोड़ देते हैं।

अरविंद केजरीवाल आज देंगे इस्तीफा

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024 (ए)। दिल्ली के नए मुख्यमंत्री को लेकर अब कयास और तेज़ हो गया है। अरविंद केजरीवाल मंगलवार को अपने पद से इस्तीफ़ा देंगे, जिसके बाद ही ये साफ हो पाएगा कि वे किसके हाथों में कमान देने जा रहे हैं।जिसके लिए आम आदमी पार्टी की अहम बैठक हुई, जिसमें आगे की रणनीति पर चर्चा की गई. केजरीवाल के इस्तीफे के ऐलान के बाद ये पहली बैठक थी लेकिन इन सबके बीच कुछ नामों की चर्चा भी तेज है, जो दिल्ली के मुख्यमंत्री पद की रेस में हैं. इसमें दिल्ली की कैबिनेट मंत्री आतिशी भी शामिल हैं।

सीएम की रेस में ये बड़े नाम

इस रेस में दूसरे नंबर पर सौरभ भारद्वाज है, जो आंदोलन के वक्त से जुड़े हैं। वहीं इस लिस्ट में कैलाश गहलोत और गोपाल राय का नाम भी सामने आ रहा है। हालांकि बीजेपी दावा कर रही है कि केजरीवाल दिल्ली में लालू मॉडल अपनाने की तैयारी कर रहे हैं। अरविंद केजरीवाल ने अपना इस्तीफा देने के लिए एलजी से वक्त मांगा है।

सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिलने के बाद तिहाड़ से निकले अरविंद केजरीवाल ने अपने पहले संबोधन में ही सीएम पद से इस्तीफा देने और जल्द चुनाव करवाने की सिफारिश भी कर दी थी। राजनीतिक पंडितों के मुताबिक ऐसा करके केजरीवाल बीजेपी से दो कदम आगे निकल गए हैं. उन्होंने ऐसा दांव चल दिया है, जिससे पार पाने में बीजेपी को मशक्कत करनी पड़ रही है।

क्या पब्लिक का मिल पाएगा आपको साथ ?

असल में अरविंद केजरीवाल के जेल जाने और एलजी विनय सक्सेना की ओर से दिल्ली सरकार के कई अधिकारों को खुद में निहित करने से प्रदेश में जनकल्याण के तमाम काम अटके पड़े हैं। इस स्थिति के लिए लोग एलजी और केंद्र सरकार को दोषी मानते हैं। उनका कहना है कि एलजी को दिल्ली सरकार के काम में अड़ंगे लगाने के बजाय उसे काम करने देना चाहिए था लेकिन सत्ता की लड़ाई में केंद्र सरकार ने पब्लिक को मोहरा बना दिया।

फरवरी 2025 तक है असेंबली का कार्यकाल

इसके चलते लोगों की हमदर्दी केजरीवाल के साथ बनी हुई है और कथित शराब घोटाले का आप पर खास असर पड़ता नहीं दिख रहा। अरविंद केजरीवाल और पार्टी के दूसरे रणनीतिकार भी इस स्थिति को बखूबी भांप रहे हैं।

क्या केजरीवाल ने ये गुणा- भाग लगाकर लिया फैसला ?

सीएम केजरीवाल का आकलन है कि अगर जल्द ही चुनाव हो जाते हैं तो पार्टी को हमदर्दी वोट बड़ी तादाद में मिलेंगे, जिससे पार्टी को तीसरी बार सत्ता में आने से कोई रोक नहीं सकेगा. वहीं अगर जनवरी में चुनाव होते हैं तो दिल्ली में दमघोंटू माहौल की वजह से परिस्थितियां सरकार के खिलाफ होती हैं। उस स्थिति में आम आदमी पार्टी को बड़ा नुकसान भुगतना पड़ सकता है। यही वजह है कि केजरीवाल ने जेल से निकलते ही बीजेपी के सामने 2 बड़े दांव चल दिए हैं, जिसका तोड़ निकालना उसके लिए अभी बाकी है।

आतंकवाद को इतना नीचे दफन करेंगे कि यह कभी बाहर न आ सके : अमित शाह

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024 (ए)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को फिर से मजबूत करने के प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन केंद्र शासित प्रदेश में इसे इतना नीचे दफन किया जाएगा कि यह कभी बाहर न आ सके। शाह ने किश्तवाड़ में एक जनसभा में दावा किया कि नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) और कांग्रेस का गठबंधन जम्मू-कश्मीर में सरकार नहीं बना पाएगा।

अमित शाह ने यहां पद्देर-नागसेनी विधानसभा क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उम्मीदवार एवं पूर्व मंत्री सुनील शर्मा के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, ''हम आतंकवाद को इतना नीचे दफन करेंगे कि वह कभी बाहर न आ सके। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस के घोषणापत्र में आतंकवादियों को छोड़ने की बात कही गई है और इस तरह आतंकवाद को फिर से मजबूत करने की कोशिशें जारी हैं। यह मोदी सरकार है और किसी की इतनी हिम्मत नहीं है कि वह जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को फिर से मजबूत कर सके।गृह मंत्री ने कहा, ''यह चुनाव दो ताकतों के बीच है, एक तरफ नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी (पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी) और दूसरी तरफ भाजपा। नेकां-कांग्रेस कह रही हैं कि अगर हम सरकार बनाते हैं तो हम अनुच्छेद 370 को बहाल करेंगे। मुझे बताइए कि क्या इसे बहाल किया जाना चाहिए? भाजपा ने पहाड़ी और गुज्जर समुदायों तथा अन्य लोगों को जो आरक्षण दिया है, उसे छीन लिया जाएगा। उन्होंने कहा, ''चिंता मत कीजिए। मैं कश्मीर में स्थिति देख रहा हूं और आश्वस्त रहिए, जम्मू कश्मीर में न तो फारूक अब्दुल्ला की पार्टी की सरकार बन रही है और न ही राहुल गांधी की पार्टी की।

यह गृह मंत्री का एक पखवाड़े के भीतर जम्मू क्षेत्र का दूसरा दौरा था। इससे पहले छह और सात सितंबर को जम्मू के अपने दो दिवसीय दौरे में उन्होंने जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा का घोषणापत्र जारी किया था और कार्यकर्ताओं के एक सम्मेलन को संबोधित किया था। सोमवार को 24 विधानसभा क्षेत्रों में प्रचार का अंतिम दिन है। इन क्षेत्रों में पद्देर-नागसेनी भी शामिल हैं। इन क्षेत्रों में 18 सितंबर को पहले चरण में मतदान होगा।

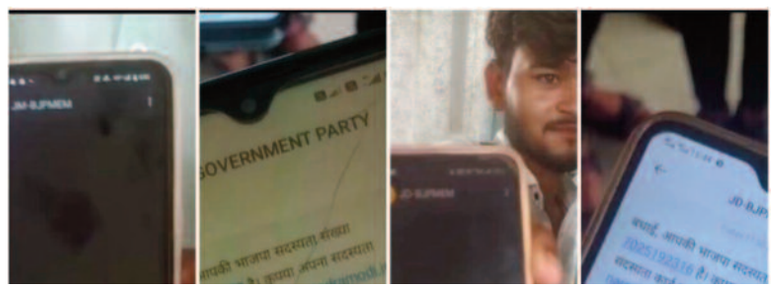

देश की सबसे बड़ी पार्टी होने का भ्रम

वीडियो शेयर करने ईएक्स सीएम लगाया गुरुतर इलाज

भोपाल,16 सितम्बर 2024 (ए)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता दिग्विजय सिंह ने भाजपा के सदस्यता अभियान पर हमला बोला है। उन्होंने सूबे के किसानों से बड़ी अपील करते हुए सदस्यता अभियान का विरोध करने की बात कही है। उन्होंने कहा कि 'इसका विरोध करो, सोयाबीन का भाव दो और सदस्यता लो।'

कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि, 'किसान भाइयों भारती जनता पार्टी सदस्य अभियान चला रही हे इसको मुंह तोड़ जवाब देना हे तो इस बार सदस्यता ना लें अगर आप किसान हो तो इसका विरोध करो सोयाबीन का भाव दो और सदस्यता लो।'

सीएम मोहन के साथ मंत्रियों ने ली सदस्यता

आपको बता दें कि भारतीय जनता पार्टी ने देशभर में बड़े पैमाने पर सदस्यता अभियान की शुरुआत की है। इस अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी में अपनी सदस्यता रिन्यु करने के साथ की है। इसी के साथ साथ अभियान के तहत मंगलवार को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के साथ साथ प्रदेश सरकार में मंत्रियों ने पार्टी की सदस्यता रिन्यू कराई है।

एमपी में डेढ़ करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य

इसी कड़ी में आज से बूथ स्तर पर भाजपा का सदस्यता अभियान शुरू हो रहा है। एमपी के 64 हजार से ज्यादा बूथों पर आज से टोलियां सक्रिय होंगी। हर बूथ पर 200 सदस्य बनाने का टारगेट है। भाजाप कार्यकर्ताओं को सौंपा गया है। इसके लिए अलग अलग क्षेत्रों के हिसाब से भाजपा कार्यकर्ताओं की टोलियां बनाई गई हैं। ये टोलियां आमजन के साथ साथ कांग्रेस समेत अन्य दलों के कार्यकर्ताओं के घरों पर भी दस्तक देंगे। इस तरह भाजपा के मौजूदा सदस्यों पर प्रदेशभर में डेढ़ करोड़ नए सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

भाजपा नेता पर थाना प्रभारी के सामने वर्दी उतरवा देने की धमकी देने का आरोप

सिंगरौली,16 सितम्बर 2024(ए)। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले का एक पुराना वीडियो वायरल हो रहा है। कोतवाली थाने में थानेदार के केबिन में पार्षद पति एक एएसआई को धमका रहे थे। साथ ही वर्दी उतरवाने की धमकी दे रहे थे। इस पर एएसआई खुद ही सीना चौड़ा करते हुए तन गया और सबके सामने अपनी वर्दी उतार दी। पूरी घटना सीसीटीवी में कैद है। वीडियो सात महीने पुराना है लेकिन वायरल अब हो रहा है। अब वीडियो लेकर कांग्रेस ने निशाना साधा है। दरअसल, 7 माह पहले कोतवाली थाना क्षेत्र के नाली निर्माण को लेकर एएसआई विनोद मिश्रा और स्थानीय लोगों के बीच विवाद चल रहा था। विवाद के बाद नगर निगम के अधिकारियों और पुलिस के अधिकारियों ने मौका मुआयना किया। मामले का हल निकालने के लिए सभी लोग कोतवाली थाने पहुंचे।

शिवसेना एमएलए ने राहुल गांधी की जीभ काटने वाले को 11 लाख रुपये का इनाम देने का एलान किया

मुंबई,16 सितम्बर 2024(ए)। शिवसेना विधायक संजय गायकवाड़ ने राहुल गांधी को लेकर विवादास्पद बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि आरक्षण खत्म करने वाले बयान के लिए जो भी राहुल गांधी की जुबान काटकर लाएगा, मैं उसको 11 लाख का इनाम दूंगा। इस बात के लिए संजय गायकवाड़ की जहां काफी आलोचना हो रही है। वहीं, महाराष्ट्र भाजपा के अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा है कि वह इस बयान का समर्थन नहीं करते हैं। बता दें कि भाजपा ने महाराष्ट्र में शिवसेना शिंदे गुट के साथ गठबंधन की सरकार बना रखी है। इससे पहले केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने राहुल गांधी के खिलाफ टिप्पणी की थी। हाल की अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा सिखों के संबंध में की गयी टिप्पणी पर आलोचना करते हुए रवनीत सिंह ने राहुल गांधी को 'देश का सबसे बडा दुश्मन और आतंकवादी' बताया था।

संजय गायकवाड़ ने मीडिया से बातचीत में कहा कि राहुल गांधी ने विदेश बयान दिया है कि वह भारत में आरक्षण व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं। उनकी इस बात ने इसने कांग्रेस को पूरी तरह से बेनकाब कर दिया है। इसके बाद उन्होंने इनाम की घोषणा करते हुए कहा कि राहुल गांधी के इस बयान के लिए जो कोई भी उनकी जुबान काटकर लाएगा, मैं उसे 11 लाख इनाम में दूंगा। गायकवाड़ विदर्भ क्षेत्र की बुलढाणा विधानसभा सीट से विधायक हैं। यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने कोई विवादास्पद बयान दिया है।

अर्थी पर शव,फिर अचानक खड़ा हो गया मुर्दा,नजारा देख चौंक उठे लोग

कासगंज,16 सितम्बर 2024(ए)। उत्तर प्रदेश के कासगंज में बीच सड़क पर कफन ओढ़े एक लाश पड़ी थी। फिर अचानक मुर्दा खड़ा हो गया। यह नजारा देख राहगीर भी चौंक उठे। इसका वीडियो भी सामने आया है। जो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

यह मामला कासगंज जनपद के कोतवाली सदर क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, राज कोल्ड तिराहे के पास एक युवक ने फेमस होने के लिए खुद के मरने की नौटंकी करते हुए रील बनाई। इस दौरान वहां मौजूद ट्रैफिक पुलिस मूकदर्शक बनकर खड़ी रही। राहगीर भी इसका वीडियो बनाने लगे और देखते ही देखते यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

जब यह वीडियो पुलिस तक पहुंचा तो इस पर तत्काल एक्शन लिया गया। बताया जा रहा है कि यह युवक फेमस होने के लिए कई तरह के वीडियो बनाता है और उसे सोशल मीडिया पर अपलोड करता है। लेकिन इस बार रील बनाने का शौक उसे रीयल लाइफ में भारी पड़ गया। पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

बाल-बाल बच गई धरती! सवा दो बजे बगल से गुजरा एस्टेरॉयड

टकराने पर मच जाती तबाही

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024(ए)। धरती एक बड़े खतरे से बच गई. आज यानी 16 सितंबर की दोपहर करीब सवा दो बजे एस्टेरॉयड 2024 आरएन16 धरती से मात्र 16 लाख किलोमीटर दूर से निकला। यानी चंद्रमा की दूरी से सिर्फ चार गुना ज्यादा. 110 फीट चौड़े पत्थर की स्पीड 104,761 केएम/एचआर थी। यह उस अपोलो समूह का एस्टेरॉयड है,

जिससे धरती को खतरा रहता है।

सब्जियों की कीमतों में आ सकती है कमी

महंगाई के मोर्चे पर मिली अच्छी खबर

नई दिल्ली,16 सितम्बर 2024(ए)। भारत में इस वर्ष (13 सितंबर तक) लंबी अवधि के औसत से 8 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है। इस कारण से आने वाले समय में सब्जियों और दूध की औसत खुदरा कीमतों में नरमी देखने को मिल सकती है। यह जानकारी सोमवार को जारी हुई एक रिपोर्ट में दी गई। एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज की ओर से जारी रिपोर्ट में बताया गया कि अब बुआई करीब पूरी हो चुकी है। अब फोकस फसल कटाई सीजन की तरफ शिफ्ट हो गया है। इस साल 6 सितंबर तक कुल 109.2 मिलियन हेक्टेयर्स क्षेत्र में बुआई हुई है और इसमें पिछले साल के मुकाबले सालाना आधार पर 2 प्रतिशत की बढ़त देखने को मिली है। रिपोर्ट में बताया गया कि इस सीजन में सभी मुख्य फसलों

की अच्छी बुआई देखने को मिली है। चावल की 41 मिलियन हेक्टेयर्स, दालों की 12.6 मिलियन हेक्टेयर्स, मोटे अनाज की 18.9 मिलियन हेक्टेयर्स और तिलहन की 19.2 मिलियन हेक्टेयर्स में बुआई हुई है। बुआई का कुल क्षेत्रफल सामान्य बुआई क्षेत्रफल का 99 प्रतिशत है, जबकि 2023 में यह आंकड़ा 98 प्रतिशत था। रिपोर्ट में बताया गया कि अधिक आपूर्ति होने के कारण कीमतों में हाल में कमी देखने को मिली और कीमतें कुछ समय के लिए यहां स्थिर रह सकती हैं, जब तक बाजार में नई आपूर्ति नहीं आ जाती है। बैंक ऑफ बड़ौदा में अर्थशास्त्री अदिति गुप्ता का कहना है कि देश के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य या सामान्य से अच्छी बारिश हुई है। इसके कारण बांधों में मौजूद जल भंडार में इजाफा देखने को मिला है। खरीफ की फसल का बुआई क्षेत्र पिछले साल के मुकाबले 2.2 प्रतिशत बढ़ा है। इस साल अब तक संयुक्त रूप से 817.9 मिलीमीटर बारिश हुई है, पिछले साल यह आंकड़ा 684.6 मिलीमीटर था।

संपादकीय

दशकीय जनगणना क्यों नहीं

आम तजुर्बा है कि मौजूदा सरकार को आंकड़ों की पारदर्शिता पसंद नहीं है। वरना, यह समझना मुश्किल है कि भारत में अब तक दशकीय जनगणना क्यों नहीं हुई, जबकि कोविड-19 महामारी का साया हटे लंबा अरसा गुजर चुका है।केंद्र ने जब कुछ महीने पहले सांख्यिकी स्थायी समिति बनाई, तो उसमें शामिल 14 विशेषज्ञों में से कुछ नामों को देख कर आश्चर्य हुआ था। खास कर यह देख कर हैरत हुई कि समिति की अध्यक्षता प्रणब सेन को सौंपी गई है, जिनकी छवि आंकड़ों के प्रति ईमानदारी बरतने की रही है। बताया गया कि समिति राष्ट्रीय सैंपल सर्वे तथा अन्य सरकारी सर्वेक्षणों की सैंपलिंग एवं आंकड़ा विश्लेषण को लेकर सुझाव देगी।यह जग-जाहिर है कि नरेंद्र मोदी सरकार के दौर में तमाम सरकारी आंकड़ों की साख क्षीण होती चली गई है। अब खबर है कि सरकार ने गुपचुप प्रणब सेन समिति को भंग कर दिया है। समिति के सदस्यों का तो कहना है कि समिति क्यों भंग हुई, उन्हें इसका कारण तक नहीं बताया गया है। अधिकारियों को मीडिया से जरूर कहा है कि अब राष्ट्रीय सैंपल सर्वेक्षणों के बारे में स्थायी संसदीय समिति बन गई है, इसलिए दोनों समितियों का दायरा टकरा रहा था। जबकि सूत्रों के आधार पर छपी अखबारी रिपोर्टों में बताया गया है कि एक बैठक के दौरान सेन समिति के सदस्यों ने जनगणना में हो रही देर पर अधिकारियों से सख्त सवाल पूछेामुमकिन है कि सरकार इससे खफा हो गई हो। आम तजुर्बा है कि मौजूदा सरकार को सवाल और आंकड़ों की पारदर्शिता पसंद नहीं है। वरना, यह समझना किसी के लिए मुश्किल है कि भारत में अब तक दशकीय जनगणना क्यों नहीं हुई? 2021 में इसे कोविड-19 महामारी के कारण टाला गया था, हालांकि उसी वर्ष तमाम चुनाव कराए गए। बहरहाल, महामारी का साया हटे लंबा अरसा गुजर चुका है।दुनिया में कोई ऐसा प्रमुख देश नहीं है, जहां अब तक जनगणना ना हुई हो। इसलिए यह कहने का आधार बनता है कि मोदी सरकार ठोस एवं विश्वसनीय आंकड़ों के स्रोत जनगणना को जानबूझ कर टाल रही है। आंकड़े समय की सच्चाई को बताते हैं। आंकड़े ना हो, तो मनमानी कहानियां बनाई जा सकती हैं। जिस सरकार की प्राथमिकता मनपसंद आंकड़े तैयार कर विमर्श को भ्रमित करना और उसके जरिए मनगढ़ंत नैरेटिव्स को विश्वसनीय बनाना रहा हो, विशेषज्ञों से उसका गुरेज समझा जा सकता है।

महान वास्तुकार थे भगवान विश्वकर्मा

हर वर्ष 17 सितम्बर को विश्वकर्मा जयंती मनायी जाती है। यह कन्या संक्रांति पर पड़ता है। यह वह दिन है जब सूर्य सिंह राशि से कन्या राशि में प्रवेश करता है। हर साल 17 सितंबर को यह पूजा की जाती है। लेकिन इस बार लोगों के मन में 16 सितंबर को लेकर संशय बना हुआ है। इस बार सूर्य 16 सितंबर की शाम को 7 बजकर 29 मिनट पर कन्या राशि में प्रवेश कर रहे हैं। इसलिए विश्वकर्मा जयंती अगले दिन यानी कि 17 सितंबर को मनाई जाएगी।

विश्वकर्मा जयन्ती भारत के जम्मू कश्मीर,पंजाब,हिमाचल, हरयाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, असम, ओडिशा, त्रिपुरा, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में मनायी जाती है। नेपाल में भी विश्वकर्मा पूजा को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। विश्वकर्मा के पूजन और उनके बताये वास्तुशास्त्र के नियमों का अनुपालन कर बनवाये गये मकान और दुकान शुभ फल देने वाले माने जाते हैं। इनमें कोई वास्तु दोष नहीं माना जाता।

विश्वकर्मा पूजा एक ऐसा त्योहार है जहां शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक भगवान विश्वकर्मा का त्योंहार मनाते हैं। कहा जाता है कि भगवान ब्रह्मा के पुत्र विश्वकर्मा ने पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया था। विश्वकर्मा को देवताओं के महलों का वास्तुकार भी कहा जाता है। इसलिए भगवान विश्वकर्मा को दुनिया का सबसे पहला इंजीनियर और वास्तुकार माना जाता है। विश्वकर्मा दो शब्दों से विश्व (संसार या ब्रह्मांड) और कर्म (निर्माता) से मिलकर बना है। इसलिए विश्वकर्मा शब्द का अर्थ है। दुनिया का निर्माता यानि की दुनिया का निर्माण करने वाला। औद्योगिक श्रमिकों द्धारा इस दिन बेहतर भविष्य, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और अपने-अपने क्षेत्र में सफलता के लिए प्रार्थना की जाती हैं। विश्वकर्मा जयन्ती के दिन देश के कई हिस्सों में काम बंद रखा जाता है और खूब पंतगबाजी की जाती है। विभिन्न प्रदेशों की सरकार विश्वकर्मा जयन्ती पर अपने कर्मचारियों को सावेतनिक अवकाश प्रदान करती है।

यह त्योहार मुख्य रूप से दुकानों, कारखानों और उद्योगों द्वारा मनाया जाता है। इस अवसर पर,कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों के श्रमिक अपने औजारों की पूजा करते हैं और भगवान विश्वकर्मा से उनकी आजीविका सुरक्षित रखने के लिए प्रार्थना करते हैं। वे मशीनों के सुचारू

रमेश सर्राफ धमोरा
झुंझुनू, राजस्थान

संचालन के लिए प्रार्थना करते हैं और विश्वकर्मा पूजा के दिन अपने उपकरणों का उपयोग करने से परहेज करते हैं।

विश्वकर्मा शिल्पशास्त्र के आविष्कारक और सर्वश्रेठ ज्ञाता माने जाते हैं। जिन्होने विश्व के प्राचीनतम तकनीकी ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों में न केवल भवन वास्तु विद्या, रथ आदि वाहनों के निर्माण बल्कि विभिन्न रत्नों के प्रभाव व उपयोग आदि का भी विवरण है। माना जाता है कि उन्होनें ही देवताओं के विमानों की रचना की थी। भगवान विश्वकर्मा की उत्पत्ति ऋग्वेद में हुई है। जिसमें उन्हें ब्रह्मांड (पृथ्वी और

स्वर्ग) के निर्माता के रूप में वर्णित किया गया है। भगवान विष्णु और शिव लिंगम की नाभि से उत्पन्न भगवान ब्रह्मा की अवधारणाएं विश्वकर्मण सूक्त पर आधारित हैं।

विश्वकर्मा प्रकाश को वास्तु तंत्र का अपूर्व ग्रंथ माना जाता है। इसमें अनुपम वास्तु विद्या को गणितीय सूत्रों के आधार पर प्रमाणित किया गया है। ऐसा माना जाता है कि सभी पौराणिक संरचनाए भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हैं। भगवान विश्वाकर्मा के जन्म को देवताओं और राक्षसों के बीच हुए समुद्र मंथन से माना जाता है। पौराणिक युग के अस्त्र और शस्त्र भगवान विश्वकर्मा द्वारा ही निर्मित हैं। विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में सर्वमान्य हैं। इनको गृहस्थ आश्रम के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक भी कहा गया है। अपने विशिष्ट ज्ञान-विज्ञान के कारण देव शिल्पी विश्वकर्मा मानव समुदाय ही नहीं वरन देवगणों द्वारा भी पूजित हैं। देवता, नर,असुर,यक्ष और गंधर्व सभी में उनके प्रति सम्मान का भाव है। भगवान विश्वकर्मा के पूजन-अर्चन किये बिना कोई भी तकनीकी कार्य शुभ नहीं माना जाता। इसी कारण विभिन्न कार्यो में प्रयुक्त होने वाले औजारों, कल-कारखानों और विभिन्न उद्योगों में लगी मशीनों का पूजन विश्वकर्मा जयंती पर किया जाता है।

धर्मग्रंथों में विश्वकर्मा को सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी का वंशज माना गया है। ब्रह्माजी के पुत्र धर्म तथा धर्म के पुत्र वास्तुदेव थे। जिन्हें शिल्प शास्त्र का आदि पुरुष माना जाता है। इन्हीं वास्तुदेव की अंगिरसी नामक पत्नी से विश्वकर्मा का जन्म हुआ। अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए विश्वकर्मा भी वास्तुकला के महान आचार्य बने। मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और देवज्ञ इनके पुत्र हैं। इन पांचों पुत्रों को वास्तु शिल्प की अलग-अलग विधाओं में विशेषज्ञ माना जाता है।

पौराणिक साक्ष्यों के मुताबिक स्वर्गलोक की इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, असुरराज रावण की स्वर्ण नगरी लंका,भगवान श्रीकृष्ण की समुद्र नगरी द्वारिका और पांडवों की राजधानी हस्तिनापुर के निर्माण का श्रेय भी विश्वकर्मा को ही जाता है। पौराणिक कथाओं में इन उत्कृष्ट नगरियों के निर्माण के रोचक विवरण मिलते हैं। उड़ीसा का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर तो विश्वकर्मा के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है। विष्णु पुराण में उल्लेख है कि जगन्नाथ मंदिर की अनुपम शिल्प रचना से खुश होकर भगवान विष्णु ने उन्हे शिल्पावतार के रूप में सम्मानित किया था।

महाभारत में पांडव जहां रहते थे उस स्थान को इंद्रप्रस्थ के नाम से जाना जाता था। इसका निर्माण भी विश्ववकर्मा ने किया था। कौरव वंश के हस्तिनापुर और भगवान कृष्ण के द्वारका का निर्माण भी विश्वणकर्मा ने ही किया था। सतयुग का स्वर्ग लोक, त्रेता युग की लंका, द्वापर की द्वारिका और कलयुग के हस्तिनापुर आदि के रचयिता विश्वकर्मा जी की पूजा अत्यन्त शुभकारी है। सृष्टि के प्रथम सूत्रधार, शिल्पकार और विश्व के पहले तकनीकी ग्रन्थ के रचयिता भगवान विश्वकर्मा ने देवताओं की रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया था। विष्णु को चक्र, शिव को त्रिशूल, इंद्र को वज्र, हनुमान को गदा और कुबेर को पुष्पक विमान विश्वकर्मा ने ही प्रदान किये थे। सीता स्वयंवर में जिस धनुष को श्रीराम ने तोड़ा था वह भी विश्वकर्मा के हाथों बना था। जिस रथ पर निर्भर रह कर श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन संसार को भस्म करने की शक्ति रखते थे उसके निर्माता विश्वकर्मा ही थे। पार्वती के विवाह के लिए जो मण्डप और वेदी बनाई गई थी वह भी विश्वकर्मा ने ही तैयार की थी।

माना जाता है कि विश्वकर्मा ने ही लंका का निर्माण किया था। इसके पीछे कहानी है कि शिव ने माता पार्वती के लिए एक महल का निर्माण करने के लिए भगवान विश्वकर्मा को कहा तो विश्वकर्मा ने सोने का महल बना दिया। इस महल के पूजन के दौरान भगवान शिव ने राजा रावण को आंमत्रित किया। रावण महल को देखकर मंत्रमुग्ध हो गया और जब भगवान शिव ने उससे दक्षिणा में कुछ देने को कहा तथा उसने महल ही मांग लिया। भगवान शिव ने उसे महल देकर वापस पर्वतों पर चले गए। विश्वकर्मा ने देवताओं के लिए उड़ने वाले रथों का निर्माण किया था। विश्वकर्मा ने देवताओं के राजा इंद्र का हथियार वज्र का निर्माण किया था। वज्र को ऋषि दधीचि और अज्ञेयस्त्र की हड्डियों से बनाया गया है। भगवान कृष्ण का सुदर्शन चक्र उनकी शक्तिशाली रचनाओं में से एक था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कामगारों के लिए बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि विश्वकर्मा जयंती पर देश में एक नई योजना 'विश्वकर्मा योजना' को लॉन्च किया जाएगा। इस योजना के तहत देश में फर्नीचर या लकड़ी का काम करने वाले, सैलून चलाने वाले, जूते बनाने वाले और मकान बनाने वाले कामगारों को आर्थिक मदद मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने कहा विश्वकर्मा जयंती पर सरकार 13 से 15 हजार करोड़ रुपये की एक योजना को लॉन्च करेंगी। इस तरह उन लोगों की सहायता हो सकेगी जो परांपरिक तरीके के कौशल से अपनी जीवका चलाते है। ये अपना भरणपोषण औजारों और हाथ से काम करके करते है। उन्होंने कहा कि इनमें सुनार हों, राजमिस्त्री हों, कपड़े धोने वाले हों या बाल काटने वाले के परिवार हों। ऐसे लोगों को इस योजना से आर्थिक ताकत प्रदान की जा सकेगी।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

क्या बीजेपी को मिलेगी हरियाणा की सत्ता फिर से ?

किसके हाथ आएगी इस बार हरियाणा की सत्ता ? विधानसभा चुनाव की को लेकर पारा हाई

-डॉ सत्यवान सौरभ
बड़वा(सिवानी) भिवानी, हरियाणा

बीजेपी बेहतर आर्थिक विकास, रोजगार के अवसर और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर जोर दे रही है। इसके अलावा भाजपा जातीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की भी कोशिश में लगी है। साथ ही भाजपा के बड़े नेता चुनाव प्रचार के दौरान किसानों के मुद्दों पर पार्टी की स्थिति को साफ कर सकते हैं, ताकि आंदोलन के कारण पैदा हुए असंतोष को कम किया जा सके। बीजेपी ने हरियाणा की 90 विधानसभा सीटों में से 46 पर सबसे ज्यादा वोट हासिल किए। हालांकि, एंटी इनकम्बेंसी, किसान आंदोलन, और जेजेपी से गठबंधन का टूटना बीजेपी के सामने बड़ी चुनौती है। विपक्षी दलों की एकजुटता और जातीय समीकरणों का का प्रभाव भी चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकता है। अब देखना यह होगा कि क्या बीजेपी हरियाणा की सत्ता में लौट पाती है या नहीं ?

पिछले 10 साल से प्रदेश की सत्ता चला रही भाजपा तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही है। हरियाणा विधानसभा चुनावों में इस बार सत्ता की लड़ाई बेहद दिलचस्प हो गई है। क्या पिछले 10 सालों से सत्ता पर काबिज भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) को इस बार भी सत्ता नसीब होगी। बीजेपी के चुनावी अभियान का प्रमुख चेहरा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही हैं। उन्हें राज्य के मतदाताओं को लुभाना है। मोदी अपने चुनावी अभियानों में भ्रष्टाचार, विकास कार्यों, और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों को जोर-शोर से उठाते हैं। क्या हरियाणा में भी इसी रणनीति के तहत, पार्टी प्रधानमंत्री के जरिए भ्रष्टाचार और विकास को मुद्दा बनाएगी। बीजेपी के नेता भी अपने चुनावी प्रचार में भ्रष्टाचार विरोधी मुद्दों को लगातार उठा रहे हैं। पार्टी मोदी की लोकप्रियता पर भरोसा कर रही है। इसलिए राज्य में पार्टी बिना किसी सीएम फेस के उतर रही है। बीजेपी बेहतर आर्थिक विकास, रोजगार के अवसर और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर जोर दे रही है। इसके अलावा भाजपा जातीय समीकरणों को ध्यान में रखते हुए सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की भी कोशिश में लगी है। साथ ही भाजपा के बड़े नेता चुनाव प्रचार के दौरान किसानों के मुद्दों पर पार्टी की स्थिति को साफ कर सकते हैं, ताकि आंदोलन के कारण पैदा हुए असंतोष को कम किया जा सके। सरकार और किसानों के बीच टकराव ने बीजेपी की छवि को नुकसान पहुंचाया। इसका सीधा असर ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी के वोट बैंक पर पड़ सकता है, क्योंकि कृषि राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। चुनाव में बीजेपी को इस असंतोष से निपटने के लिए प्रभावी रणनीति बनानी होगी, ताकि वह किसान समुदाय का विश्वास फिर से जीत सके। इसके साथ ही खिलाड़ियों के विरोध प्रदर्शन का बीजेपी के चुनावी अभियान पर गहरा असर पड़ सकता है,खासतौर पर हरियाणा जैसे राज्य में, जहां खेल और खिलाड़ी राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महिला पहलवानों के नेतृत्व में हुए विरोध प्रदर्शनों, जो यौन उत्पीड़न के आरोपों और न्याय की मांग पर केंद्रित थे, राज्य में बीजेपी की छवि को झटका दिया है। बीजेपी को इन विरोधों से हुए नुकसान से निपटने के लिए संवेदनशीलता के साथ ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि वह खेल जगत के समर्थन को खोए बिना अपने चुनावी अभियान बिना अपने चुनावी अभियान को सफल बना सके।

विपक्षी पार्टियां बीजेपी के खिलाफ अपने-अपने तरीके से गठजोड़ बनाने की कोशिश कर रही हैं। यदि इन विपक्षी दलों के एकजुट होने का असर जमीन पर दिखता है तो बीजेपी के लिए चुनावी जीत की राह और कठिन हो सकती है। विपक्ष खासतौर पर, एक समुदाय वोट बैंक पर फोकस कर रही है, और उसने राज्य के भीतर जातिगत समीकरणों को साधने की रणनीति तैयार की है। हरियाणा की राजनीति में जातीय समीकरण का बड़ा महत्व है। एक समुदाय, जो राज्य की राजनीति में एक प्रमुख भूमिका निभाता है, उसका एक बड़ा हिस्सा बीजेपी से नाराज चल रहा है। पार्टी को अन्य मतदाताओं पर ज्यादा निर्भर रहना पड़ रहा है। वहीं, अन्य समुदायों के साथ गठजोड़ बनाना भी पार्टी के लिए एक बड़ी चुनौती है। बीजेपी के सामने इस बार जातीय संतुलन साधने और सभी वर्गों को साथ लाने की बड़ी जिम्मेदारी है। बीजेपी को अपने दम पर अन्य ग्रामीण वोटों को आकर्षित करना होगा, जो आसान नहीं होगा। इनका अलग होना बीजेपी के लिए एक और मुश्किल खड़ी कर सकता है। 10 साल की सत्ता के बाद बीजेपी के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर का बड़ा खतरा है। सत्ता में रहते हुए किसी भी पार्टी को सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ता है और बीजेपी इससे अछूती नहीं है। विकास कार्यों के बावजूद, बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के आरोप जैसे मुद्दे विपक्षी दलों द्वारा उठाए जा रहे हैं, जिससे जिससे मतदाताओं का असंतोष बढ़ सकता है। खासकर, लोकसभा चुनावों में बीजेपी को हरियाणा की 10 में से सिर्फ 5 सीटें मिली थीं, जो पार्टी के लिए चेतावनी संकेत हैं। चुनाव के इतनी नजदीक मनोहर लाल खट्टर की जगह नए चेहरे नायब सिंह सैनी को सत्ता सौंपी गई। लेकिन क्या यह फैसला पार्टी के भीतर और जनता के बीच भी सत्ता के प्रति असंतोष को कम करने में मददगार साबित होगा, क्योंकि चुनाव के इतने करीब मुख्यमंत्री बदलने के फैसले का असर पार्टी के चुनाव परिणाम पर पड़ सकता है। विधानसभा चुनावों में, स्थानीय मुद्दों और जातीय समीकरणों का अधिक प्रभाव होता है, और यही कारण है कि बीजेपी को इस बार राज्य में अधिक मेहनत करनी पड़ रही है। हरियाणा में 2014 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी ने बड़ी जीत हासिल की थी, जब उसने 47 सीटें जीतीं और स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनाई। 2019 के विधानसभा चुनावों में पार्टी का प्रदर्शन उतना प्रभावशाली नहीं रहा, और उसे सिर्फ 40 सीटें मिलीं, जो बहुमत से कम थीं। इसके बाद जेजेपी के साथ गठबंधन कर सरकार बनाई गई। इस बार यह देखना दिलचस्प होगा कि पार्टी का विधानसभा चुनाव में प्रदर्शन कैसा रहता है। हरियाणा में बीजेपी का पूरा फोकस प्रधानमंत्री मोदी के प्रचार पर है, और पार्टी को उम्मीद है कि उनके नेतृत्व में पार्टी यहां लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी कर सकेगी। पार्टी अपने चुनाव प्रचार में जातीय समीकरणों को साधने, कांग्रेस के भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने, और विकास कार्यों का हवाला देकर वोटरो को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश करेगी।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा ने सभी समुदायों नेतृत्व पर जोर दिया है, जबकि विपक्ष ने विशेष जाति कार्ड का खुलकर उपयोग किया है। भाजपा ने विभिन्न जातियों को टिकट देने की कोशिश की है। हरियाणा में भाजपा ने दस साल की सत्ता के साथ विधानसभा चुनावों में सत्ता विरोधी माहौल की काट के लिए इस बार सामाजिक समीकरणों का गणित तो बिठाया है, लेकिन इसकी केमिस्ट्री किस करवट बैठेगी इसे लेकर असमंजस कायम है। 2024 के लोकसभा चुनावों के मतदान के आंकड़ों के मुताबिक, विधानसभा चुनाव पर अनुमान लगाया गया है कि राज्य में त्रिशंकु सदन की भी स्थिति बन सकती है। लेकिन, अगर विपक्षी पार्टियां एक साथ आ जाती हैं तो वह बढ़त हासिल कर सकती हैं। वहीं अब विधानसभा क्षेत्र के स्तर पर बात की जाए तो हर एक लोकसभा में कई सारी विधानसभा सीटें होती हैं। बीजेपी ने हरियाणा की 90 विधानसभा सीटों में से 46 पर सबसे ज्यादा वोट हासिल किए। हालांकि, एंटी इनकम्बेंसी, किसान आंदोलन, और जेजेपी से गठबंधन का टूटना बीजेपी के सामने बड़ी चुनौती है। विपक्षी दलों की एकजुटता और जातीय समीकरणों का का प्रभाव भी चुनावी परिणामों को प्रभावित कर सकता है। अब देखना यह होगा कि क्या बीजेपी हरियाणा की सत्ता में लौट पाती है या नहीं?

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

56 इंच की छाती हुई खत्म

अब मोदी अमेरिका जा रहे हैं। राहुल ने तो कह दिया 56 इंच की छाती खत्म हो गई। अगर देश में अपने भक्तों को विश्वास दिलाना है कि नहीं वह छाती है तो अमेरिका में एक प्रेस कान्फ्रेंस कर लें। जैसे नेता प्रतिपक्ष वहां पत्रकारों के हर सवाल का जवाब दिया वैसे नेता पक्ष भी दे लें। दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा कि मोदी प्रेस से नहीं डरते! देखो अमेरिका में जवाब दे रहे हैं।राहुल गांधी का अमेरिका दौरा बहुत सफल रहा। इसका सबसे बड़ा पैमाना यह कि भारत में पिछले तीन दिन मोदी सरकार के मंत्री,पार्टी भाजपा,गोदी मीडिया अंध भक्तों को साथ मायावती को भी राहुल को ट्रोल करने के लिए कूदना पड़ा। झूठ गलतबयानी का गंदा नाला बहा दिया गया। मगर क्या हुआ?वे अमेरिका में तो छा गए। नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद यह उनका यह पहला विदेश दौरा था। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के दोनों उम्मीदवारों डोनाल्ड ट्रंप और कमला हैरिस के साथ वहां की वर्तमान सरकार भी यह देखने के लिए उत्सुक थी कि भारत के नेता प्रतिपक्ष का वहां रह रहे भारतियों, अमेरिकी राजनीतिक सर्किल और पढी लिखी सोसायटी में कैसा स्वागत होता है।भारतीयों ने तो ड्लास एयरपोर्ट पर भारी संख्या में पहुंचकर इंडिया इंडिया के नारों के साथ उनका भव्य स्वागत किया। बाद में राहुल ने भारतीय प्रवासियों को एक बड़े कार्यक्रम में संबोधित किया। उनसे बतचीत की। दो विश्वविद्यालयों में वे गए। और वहां भारी तादाद में स्टूडेंट और टीचर उनको सुनने और उनसे बातचीत करने आए। अमेरिकी सांसद उनसे मिले। और सबसे बड़ी बात कि पिछले अमेरिकी दौरे की तरह इस बार फिर उन्होंने नेशनल प्रेस क्लब में प्रेस कान्फ्रेंस की।सिर्फ अमेरिकी नहीं वहां दुनिया भर का पत्रकार होता है और वह देख रहा था कि भारत का प्रतिपक्ष का नेता तो हमसे मिल रहा है जैसे दुनिया के बाकी बड़े नेता भी मिलते हैं। मगर भारत के प्रधानमंत्री तीन बार जीतने के बाद भी एक बार भी हमसे नहीं मिले। यह एक रिकार्ड है कि किसी देश का शासनाध्यक्ष वहां एक बार भी प्रेस से नहीं मिला हो। अन्तरराष्ट्रीय पत्रकार और राजनयिक जानना चाहते हैं कि किसी भी देश का सरकार प्रमुख और नेता प्रतिपक्ष जिसे वहां शेडो प्राइम मिनिस्टर भी कहते हैं दुनिया के अहम मुद्दों के बारे में क्या विचार रखता है। और भारत के इन दोनों संवैधानिक पदों वालों प्रधानमंत्री और नेता प्रतिपक्ष से तो अमेरिका और पश्चिमी देश हमेशा यह जानना चाहते हैं कि वे चीन के बारे में क्या रुख रखते हैं।अमेरिकी और पश्चिमी देशों (नाटो) की समस्या अब रूस नहीं उसे तो उन्होंने यूक्रेन के साथ उलझा दिया है। चीन है। चीन किसी युद्ध में उलझे बिना अपनी विस्तारवादी योजनाओं को कामयाब करता जा रहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चीन की दी क्लीन चिट चीन के लिए बहुत बड़ा सर्टिफिकेट है। उसे ही दिखाकर वह अमेरिका और पश्चिमी देशों से कहता है कि हमारे पड़ोसी देश भारत के प्रधानमंत्री ने तो साफ कहा है कि यहां न कोई घुसा है और न कोई है। आप लोग क्या सेटेलाइट से गलत गलत तस्वीरें दिखाते रहते हैं कि चीन ने भारत के इतने इलाकों में कब्जा कर लिया। गांव बसा लिए सड़कें बना लीं। भारत की सरकार तो कुछ कहती नहीं हैं। आप लोग कहते रहते हैं। और एक वहां का कांग्रेस के नेता राहुल गांधी। मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त! चीन कहता है नहीं चलेगा !अब सवाल तो यह है कि देश में यह सब प्रधानमंत्री मोदी से किए जाने चाहिए। मगर भाजपा मीडिया राहुल गांधी से पूछते हैं कि वहां टी शर्ट क्यों नहीं पहनी? हालांकि वे यहां से टी शर्ट पहन कर ही रवाना हुए थे और वहां टी शर्ट पहन कर ही उतरे थे। मगर और कोई सवाल लायक दिमाग उनका बचा नहीं है सब नफरत और विभाजन में फ्रीज हो गया तो उनके कपड़े, एक एक शब्द, पूरा वाक्य भी नहीं और जो नहीं कहा उस पर और जो कहा है उसका भ्रामक अर्थ बताकर वे देश की जनता में फिर राहुल विरोधी माहौल बनाना चाहते हैं।मगर जैसा कि खुद राहुल ने कहा कि वह सब अब अतीत की बातें हो गईं। अमेरिका से राहुल का सबसे बड़ा मैसेज यही है। है तो भारत के लिए मगर दुनिया भी सुनेगी। हालांकि दुनिया के लिए मोदी का करिश्मा कभी था ही नहीं। वे महान भारत के प्रधानमंत्री हैं तो जो इस देश के प्रधानमंत्री होने के नाते सम्मान मिलना चाहिए था वह उन्हें मिलता है। देवगौड़ा को भी मिला, चौधरी चरण सिंह को भी, चन्द्रशेखर को भी। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री के नाते और फिर अपनी शख्सियत, शिक्षा, लेखकीय प्रतिभा और आजादी के आन्दोलन का नेतृत्व करने के कारण नेहरू ने कमाया उसका तो शतांश भी इन्हें नहीं मिल सकता। ढोल चाहे जितना पीटें की तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद नेहरू के बराबर हो गए मगर जैसे कोई ब्रेडमेन के बराबर टेस्ट खेलकर या उनसे ज्यादा खेलकर उनके बराबर नहीं हो सकता। या पेले के मुकाबले ओलंपिक में जाकर पेले के बराबर भी नहीं हो सकता वैसे ही नेहरू के कद को पाने का सवाल ही नहीं पैदा होता।तो विदेशों में कुछ नहीं था। केवल भारत था और भारत रहेगा। मगर राहुल का यह कहना कि 56 इंच की छाती और मेरी ईश्वर से डायरेक्ट बात होती है अब सब अतीत की चीज हो गई। भारत में प्रधानमंत्री मोदी को और उनसे डर रहे मीडिया को और मोदी के बने अक्ल से अंधे भक्तों को यही बात सबसे नागवार लग रही है। भाजपा और आरएसएस में तो हो सकता है इस बात को लेकर थोड़ी खुशी हो कि मोदी की व्यक्तिगत राजनीति और महिमामंडन पर राहुल ने सही चोट की है मगर वे फिलहाल बोल नहीं सकते। डर उनमें भी है तो खुद उपत कर (अपने आप, मनॉ से) मोदी का बचाव नहीं कर रहे हैं। मगर मीडिया और भक्त राहुल के पीछे लगे पड़े हैं।राहुल ने कहा कि 240 आने के बाद इनका डर खत्म हो गया है। और यह भी बताया कि 240 भी कैसे आईं। चुनाव आयोग, मीडिया, सारे वित्तिय साधन और हर संवैधानिक इन्स्टिट्यूशन कब्जे में कर लिए थे। वह तो मैं संविधान हाथ में लेकर निकला तो देश के दलित, पिछड़े, आदिवासी, गरीब कमजोर वर्ग की समझ में आया कि वह संविधान जिसकी वजह से ही हमें यह वोट देने का अधिकार मिला हुआ है वही हाथ से निकला जा रहा है। वोट देने के अधिकार को तो बचाना होगा। और इसी अधिकार को बचाने के लिए लोगों ने अपने डर पर जीत हासिल कर ली।राहुल का यह डरो मत का नारा सफल हुआ। इसी से बौखला कर वे अब राहुल को आरक्षण पर घेरने लगे। डर मूलतः दलित, आदिवासी, पिछड़े, गरीब कमजोर का ही खत्म हुआ। और इसी वर्ग को फिर बरगलाने के लिए वे यह गलत प्रचार करने लगे कि राहुल आरक्षण खत्म करना चाहते हैं।राहुल ने इस झूठे प्रचार के अगले दिन प्रेस कान्फ्रेंस में कहा ताकि किसी को कुछ पूछना हो तो पूछ ले, स्थिति स्पष्ट हो जाए कि उन्होंने आरक्षण खत्म करने की बात कहीं नहीं कही। बल्कि यह कहना था कि इतना समर्थ हो जाना चाहिए। राहुल ने कहा कि वे तो 50 प्रतिशत से उपर आरक्षण की मांग कर रहे हैं।ये ठीक वैसा ही है कि बुत हमसे कहें काफिर! राहुल हाथ में संविधान लिए घूमे ही इस वास्ते थे कि उसमें दिए आरक्षण की रक्षा हो सके। जाति गणना की बात और कौन कर रहा है? राहुल की दलित आदिवासी पिछड़े में बढ़ती स्वीकार्यता ने ही प्रधानमंत्री मोदी को परेशान कर दिया।अब मोदी अमेरिका जा रहे हैं। राहुल ने तो कह दिया 56 इंच की छाती खत्म हो गई। अगर देश में अपने भक्तों को विश्वास दिलाना है कि नहीं वह छाती है तो अमेरिका में एक प्रेस कान्फ्रेंस कर लें। जैसे नेता प्रतिपक्ष वहां पत्रकारों के हर सवाल का जवाब दिया वैसे नेता पक्ष भी दे लें। दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा कि मोदी प्रेस से नहीं डरते! देखो अमेरिका में जवाब दे रहे हैं।और अगर उससे पहले प्रेक्टिस करना है तो यहां एक नेशनल प्रेस कान्फ्रेंस कर लें।

-शकील अख्तर-

पेड़ों से ही जीवन हैं

कृष्णा चौहान अमेरी, बरमकेला सारंगढ़-बिलाईगढ़ (छ.ग.)

पेड़ों से ही जीवन हैं,
पेड़ों की पूजा करना हैं!
पेड़ों से हमें स्वच्छ,
ऑक्सीजन मिलता हैं!
पेड़ पौधे से हमें,
नाता जोड़ना हैं!
पेड़ पौधे लगाना हैं,
हरियाली लाना हैं!
पेड़ पौधे अनमोल हैं,
औषधि प्रदान करते हैं!
पेड़-पौधे हमारे जीवन में,
लाभदायक होते हैं !
इनसे फल फूल लकड़ी,
प्राप्त होते हैं !

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

दो दिनों से हो रही भारी बारिश के कारण शहर के कई स्थानों पर गिरे पेड़,दो घायल

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

पिछले दो दिनों से रिमझिम व मूसलाधार बारिश हो रही है। लगातार बारिश होने से जन जीवन अस्त-व्यवस्त हो गया है। मौसम विभाग ने संभाग के सभी जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है। सोमवार को हुई भारी बारिश के कारण शहर के कलाकेन्द्र मैदान सहित कई स्थानों पर पेड़ गिरे हैं। दोपहर करीब 12.30 बजे कलाकेन्द्र मैदान में ईद मिलादुन्नबी का कार्यक्रम चल रहा था। इस समय काफी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग मौजूद थे। तभी अचानक यूकेलिप्टस का पेड़ अचानक उखड़ कर गिर गया। पेड़ गिरने से मौके पर अफरातफरी की स्थिति बन गई। पेड़ गिरने से 2 व्यक्ति घायल हो गए और 2-3 दुपहिया चारपहिया वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। घायलों को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया।

दो दिनों से हो रही भारी बारिश के कारण शहर के कला केन्द्र मैदान में यूकेलिप्टस का पेड़ गिर गया। इस दौरान मैदान में ईद मिलादुन्नदबी पर मुस्लिम समाज का कार्यक्रम चल रहा था। पेड़ गिरने से मौके पर अफरातफरी की स्थिति बन गई। पेड़ गिरने से 2 व्यक्ति घायल हो गए और 2-3 दुपहिया व चारपहिया वाहन क्षतिग्रस्त हो गए हैं। घायलों को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया है। जिस स्कार्पियो वाहन पर पेड़ गिरा उसमें कुछ महिलाएं बैठी हुई थीं। हालांकि वाहन में बैठा कोई भी हताहत नहीं हुआ है। कला केन्द्र मैदान के अलावा अंबिकापुर-रामानुजगंज रोड स्थित रवि पेट्रोल पंप के समीप पेड़ गिरने से कुछ देर के लिए आवागमन बाधित हो गया। वहीं बीटीआई के अगल में भी दो यूकेलिप्टस का पेड़ गिरे हैं।

महिला पर टांगी से जनलेवा हमला,आरोपी गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

ग्राम हरिहरपुर में रविवार को एक महिला पर टांगी से जानलेवा हमला करने के मामले में उदयपुर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

उदयपुर पुलिस के अनुसार निशा कोर्राम हरिहारपुर की रहने वाली है। इसकी मां लक्ष्मनिया 15 सितंबर को भैंस चराने जंगल में गई थी। वापस आने के दौरान गांव के मधु कोर्राम ने टांगी से उसके सिर, कंधा व गला पर हमला कर दिया। इससे वह गंभीर रूप से मख्मी हो गई। इसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वहीं पीड़िता के बेटी निशा ने मामले की रिपोर्ट उदयपुर थाना में दर्ज कराई थी। रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी मधु कोर्राम (27) निवासी हरिहरपुर थाना उदयपुर को गिरफ्तार कर जेल दाखिल कर दिया है।

जमीन विवाद पर भाई की हत्या, दो पुत्र सहित पिता गिरफ्तार

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

जमीन विवाद को लेकर छोटे भाई ने अपने दो बेटों के साथ मिलकर बड़े भाई की बेदम पिटाई कर दी थी। इसेस उसकी मौत इलाज के दौरान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हो गई थी। मामले में धौरपुर पुलिस ने आरोपी दो पुत्र सहित पिता को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने तीनों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

जानकारी के अनुसार पंचम राम (70) ग्राम किशुनपुर थाना धौरपुर का रहने वाला था। 14 सितंबर को पंचम अपने मक्का बाड़ी में घेरावा करने के लिए खम्बा लगाने गया था। इस दौरान उसका छोटा भाई बृजमोहन अपने बेटे सिमोन व उमेश के साथ पहुंचा और जमीन विवाद को लेकर अपने बड़े भाई पंचम के साथ विवाद करने लगा। इस दौरान तीनों बाप-बेटे ने मिलकर लाठी डंडे से पंचम की बेदम पिटाई कर दी। इससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। परिजन उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया था। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई थी। मृतक की बहू जीरमेन लकड़ा के रिपोर्ट पर धौरपुर पुलिस ने आरोपी बृजमोहन लकड़ा (54), सिमोन लकड़ा (35) व उमेश लकड़ा (21) को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने तीनों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

संदीप लकड़ा हत्याकांड : आईजी ने की मुख्य आरोपी के बारे में अहम सुराग देने वालों को 30 हजार के इनाम की घोषणा की

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

» मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय को शरण देने व भगाने में सहयोग करने के मामले में जीजा गिरफ्तार

सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम बेलजोर निवासी दीपेश उर्फ संदीप लकड़ा हत्याकांड मामले में मुख्य आरोपी ठेकेदार अभिषेक पांडेय पुलिस गिरफ्त से बाहर है। वहीं मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर परिजन व सामाज के लोग अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे हैं। मृतक का शव 10 दिनों से मरच्यूरी में पड़ा हुआ है। शव का अंतिम संस्कार अब तक नहीं हुआ है। परिजन का कहना है कि जबतब पुलिस मुख्य आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर लेती तब तक शव का अंतिम संस्कार नहीं करेंगे। परिजन शव लेने से साफ मना कर दिया है। वहीं मामले को तुल पकड़ता देख आईजी अंकित गर्ग ने मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय की गिरफ्तारी व उसके बारे में अहम सुराग देने वालों को 30 हजार रुपए की इनाम की घोषणा की है। वहीं इससे पूर्व भी एसपी ने भी इस मामले में दस हजार रुपए इनाम की घाषणा कर चुके हैं। वहीं पुलिस ने मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय के जीजा दीपांशु महराज उर्फ राहुल (29) निवासी विवेकानंद कॉलोनी, गली नंबर 3 थाना कोतवाली धमतरी को गिरफ्तार किया है। इसके द्वारा मुख्य आरोपी को भगाने में सहयोग करने व शरण दिया गया था। इसके अलावा इसके द्वारा आरोपी अभिषेक पाण्डेय के फरार रहने के दौरान अपने मोबाइल से अन्य आवश्यक सुविधा प्रदान कराया गया था। पुलिस ने दीमांशु का मोबाइल भी जब्त किया है। पुलिस ने आरोपी के धारा 212 के तहत कार्रवाई की है।

राजमिस्त्री दीपेश उर्फ संदीप लकड़ा की सीतापुर के ग्राम बेलजोरा निवासी ठेकेदार अभिषेक पांडेय ने अपने 5 कर्मचारियों के साथ मिलकर 7 जून को हत्या कर दी थी। इसके बाद 8 जून को उसका शव मैनपाट के लुरैना बड़वापाट स्थित पानी टंकी के फाउंडेशन के नीचे दफन कर दिया था। मृतक के परिजनों व सर्व आदिवासी समाज द्वारा पुलिस पर दबाव बनाए जाने के बाद 6 सितंबर को संदीप की लाश मिली थी। मामले में पुलिस ने घटना में शामिल 5 आरोपी को अब तक गिरफ्तार कर चुका है। गिरफ्तार आरोपियों में प्रत्युश पाण्डेय, गुड्डू कुमार, तुलेश्वर तिवारी, शैल शक्ति साहू, गौरी तिवारी का नाम शामिल है। वहीं मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय अभी भी पुलिस गिरफ्त से बाहर है। जिसे पुलिस तलाश कर रही है। वहीं जबतब मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हो जाती तब तक परिजन शव लेने से इंकार कर दिया है। मृतक का शव दस दिनों से अस्पताल के मरच्यूरी में पड़ा हुआ है। इधर मामले को तुल पकड़ता देख आईजी अंकित गर्ग ने मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय की गिरफ्तारी व उसके बारे में अहम सुराग देने वालों को 30 हजार रुपए की इनाम की घोषणा की है। वहीं इससे पूर्व भी एसपी ने भी इस मामले में दस हजार रुपए इनाम की घाषणा कर चुके हैं। वहीं पुलिस ने मुख्य आरोपी अभिषेक पांडेय के जीजा दीपांशु महराज उर्फ राहुल (29) निवासी विवेकानंद कॉलोनी, गली नंबर 3 थाना कोतवाली धमतरी को गिरफ्तार किया है। इसके द्वारा मुख्य आरोपी को भगाने में सहयोग करने व शरण दिया गया था। इसके अलावा इसके द्वारा आरोपी अभिषेक पाण्डेय के फरार रहने के दौरान अपने मोबाइल से अन्य आवश्यक सुविधा प्रदान कराया गया था। पुलिस ने दीमांशु का मोबाइल भी जब्त किया है। पुलिस ने आरोपी के धारा 212 के तहत कार्रवाई की है।

ईद मिलादुन्नबी का त्योहार शांति से मनाने थाने में शांति समिति की बैठक हुई संपन्न

- संवाददाता -
लखनपुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

लखनपुर थाना में रविवार 15 सितंबर दिन सोमवार को बैठक में ईद मिलादुन्नबी का त्यौहार मानने को लेकर चर्चा किया गया मुस्लिम समुदाय के

लोग सोमवार के दिन सुबह 8 बजे जामा से पठानपुरा थाना चौक बस स्टैंड होते हुए जुलूस निकलता है जिसे लेकर समय सीमा किस रूट में निकलना है झंडा, साउंड सिस्टम जुलूस को लेकर विचार विमर्श किया गया। इस त्यौहार में आसपास के काफी संख्या में लोग शामिल होते हैं लखनपुर थाना में शांति समिति का बैठक में थाना प्रभारीअश्वनी सिंह द्वारा कहां गया के शांतिपुर्ण तरीके से त्यौहार मनाये किसी तरह के कोई अनहोनी ना हो इस बात का कमेटी की सदस्य ध्यान रखें इस बैठक मैं मुख्य रूप से नगर पंचायत उपाध्यक्ष राम नारायण दुबे लुण्ड्रा विधायक प्रतिनिधि राकेश साहू समीम खान हाशिम खान नसरत अली लतीफ खान जानिसार अख्तर सरफुद्दीन अंसारी जमील अहमद इमरान अंसारी आमिर सोहेल आसिफ नूर जमील अखूतर थाना के स्टॉप मौजूद थे।

जश्ने ईद मिलादुन्नबी के मौके पर बरसते पानी में समुदाय के लोगों ने निकाला जुलुस...बड़ी संख्या में आशिक ए रसूल हुए शामिल

» सर्व आदिवासी समाज के लोगों ने पुष्प वर्षा कर जुलुस का किया स्वागत

- संवाददाता -
लखनपुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

लखनपुर नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में जश्न-ए ईद मिलादुन्नबी पर्व हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाया गया। 16 सितंबर दिन सोमवार को सुबह लगभग 10 बजे जश्ने ईद मिलादुन्नबी के मौके पर बरसते पानी में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने लखनपुर जामा मस्जिद से तिरंगा और इस्लामिक झंडे के साथ विशाल जुलूस निकाला। यह जुलुस नगर के पैलेस रोड ,पठानपुरा ,पुलिस थाना गुदरी बाजार होते हुए बस स्टैंड पहुचा जहां सर्व आदिवासी समाज के लोगों ने पुष्प वर्षा कर जुलूस का स्वागत किया और एक दुसरे के गले मिलकर जश्ने ईद मिलादुन नबी पर्व को लेकर मुबारकबाद दी। सरकार की आमद मरहबा,पत्ती पत्ती फूल फूल या रसूल या रसूल के साथ यह जुलुस जामा मस्जिद होते ईदगाह के पास पहुंचा सलातो सलाम के बाद जुलूस का समापन किया गया। ईदगाह में मिलाद शरीफ का

प्रोग्राम रखा गया था जहां लखनपुर जामा मस्जिद के इमाम मुफ्ती मोहम्मद खालीदुल कादरी अलगौसी, मौलाना हसन रजा, समीउल्लाह,सफीउल्लाह, हाफिज शमसिर आलम के द्वारा तकरीर कर हजरत मोहम्मद साहब के जीवनी पर प्रकाश डाला। फतेहाखानी के बाद देश और दुनिया में अमन शांति और भाईचारे की दुआ मांगी गई और हजरत मोहम्मद साहब को सलाम पेश किया गया।समापन के बाद सभी लोगो को सिरनी लंगर बांटा गया। हजरत मोहम्मद साहब पूरी दुनिया के लिए रहमत बनकर आज ही के दिन दुनिया में तशरीफ लाए थे उनकी आमद के दिन को दुनिया भर के मुस्लिम ईद मिलादुन्नबी के रूप में मनाते हैं। 12 वीं रविउल अव्वल जश्ने ईद मिलादुन्नबी के मौके पर लखनपुर जमा मस्जिद को फूलो गुब्बारों और रंग बिरंगी रोशनी से सजाया गया जो आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। जश्ने ईद मिलादुन्नबी के मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोगो ने घरों और महोल्लो में पतंगी और रंग बिरंगी रोशनियों से सजाया गया है। हजरत मोहम्मद साहब के पैगाम को पहुंचाने के लिए जगह जगह बैनर पोस्टर अंजुमन गौसिया कमेटी की ओर से लगाया गया है। जश्ने ईद मिलादुन्नबी पर्व पर स्थानीय और पुलिस प्रशासन का विशेष सहयोग रहा।

मानव को मानव समझना ही है इस्लाम : आबूलेश आजमी

धूमधाम से मनाया गया पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब का जन्म उत्सव ईद मिलादुन्नबी

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब का जन्म उत्सव ईद मिलादुन्नबी सोमवार को मुस्लिम समुदाय द्वारा धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर शहर के 12 मस्जिदों के इमामों और उसके कमेटी से जुड़े लोगों द्वारा सीरतुन्नबी कमेटी मोमिनपुरा के नेतृत्व में जुलूस निकला गया। जो शहर के सद्भावना चौक से प्रारंभ होकर मोमिनपुरा चौक, रसूलपुर, बरेजपारा, जयस्तंभ चौक, सदर रोड़, कादंबनी चौक, इमलीपारा चौक, महामाया चौक, संगम चौक, देवीगंज रोड़, घड़ी चौक होते हुए स्थानीय कला केंद्र में आम जलसा में तब्दील हुआ। इस अवसर पर सीरतुन्नबी कमेटी के संरक्षक व पूर्व छत्तीसगढ़ श्रम आयोग के अध्यक्ष शफी अहमद ने कहा कि ईद मिलादुन्नबी हजरत मुहम्मद साहब के जन्म दिवस के रूप में पुरी दुनिया में मनाया जाता है जो मानवता को शांति का संदेश देता है। आज अम्बिकापुर के

मुस्लिम समुदाय के द्वारा पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब को याद करते हुए उनके बताए रास्ते का अनुसरण करते हुए शांति पूर्वक एक होकर भव्य जुलूस निकाला गया। इस अवसर कांजी ए शहर मौलाना आबूलेश आजमी ने पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब के जीवनी पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मोहम्मद साहब ने अपने जीवन काल में मानव उत्थान के लिए जो उपदेश दिए थे वह आज भी उतने ही कारगर हैं जितना उसे समय थे। उन्होंने कहा कि मानव को मानव समझना ही इस्लाम है। सभी को एक होकर मानवता के लिए काम करना ईद-मिलादुन्नबी का मुख्य उद्देश्य है।

रसूलपुर मस्जिद के इमाम मौलाना सगीर अहमद मिस्बाही ने कहा कि इस्लाम के आखिरी पैगाम हजरत मुहम्मद साहब ने अपने अल्प आयु में जब अरब देशों में मानवता को कुचला जा रहा था, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे थे, इंसानों को गुलाम बनाया जा रहा था उस समय उन्होंने ने मानवता के लिए जीयों और जीने दो का उपदेश दिया था। सीरतुन्नबी कमेटी द्वारा वर्ष 2023 में शिक्षा, सामाजिक कार्य और खेलकूद प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कमेटी द्वारा मुस्लिम समाज के सबसे वरिष्ठ अधिवक्ता हाजी अब्दुल रशीद को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से शहरे कांजी मौलाना आबूलेश आजमी, शफी अहमद, सहित अन्य मुस्लिम धर्म गुरुओं ने सम्मानित किया। वहीं सिख समाज अम्बिकापुर के प्रमुख रघुवीर सिंह छाबड़ा को मुस्लिम समाज द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर मंच संचालन दानिश रफीक ने किया। ईसाई समाज के प्रमुख विशप स्वामी, प्रजापति ब्रह्म कुमारी आई दो बहने, जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राकेश गुप्ता, द्वितेंद्र मिश्रा, समाज सेवी वंदना दत्ता, सतेंद्र तिवारी, प्रवीण गुप्ता, हेमंत सिंहा, मोहम्मद इस्लाम खान, रशीद पेंटर, रशीद अंसारी, हाजी यासिन, हाजी रहमत खान, हाजी रमजान, मो. हसन , असफाक पापुलर बस, तनवीर हसन, मुजीबुर्रहमान, कयामुद्दीन, फैजान, अजहर, सद्दाम, आरजू सहित काफी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

संभाग स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता लुचकी व नवानगर की टीम ने जीता

- संवाददाता -
अंबिकापुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

गांधी स्टेडियम में खेले जा रहे संभाग स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के तहत सोमवार को दूसरे दिन दो मैच खेले गए। पहला मैच फुटबॉल क्लब लुचकी व आर्षित हेल्प लाइन स्कूल दरिमा के मध्य खेला गया। जिसमें लुचकी की टीम ने 2-0 गोल से मैच जीत लिया। मैच के प्रथम हाफ में लुचकी की टीम ने गोलकर मैच 1-0 से बढत बना ली। दूसरे हाफ में दरिमा की टीम ने काफी प्रयास किया लेकिनन गोल करने में सफल नहीं हो पाई। वहीं खेल के अंतिम समय में लुचकी ने दूसरा गोल कर टीम को 2-0 से विजयी दिलाई। वहीं दूसरा मैच जंगली तूफान क्लब कुनकुरी व फुटबॉल क्लब नवानगर के मध्य खेला गया। जिसमें

जंगली तूफान क्लब कुनकुरी को नवानगर की टीम ने ट्राईब्रेकर में 4-2 हराया। मैच के प्रथम हाफ में नवानगर की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए 1-0 गोल से बढ़त बना लिया। मैच के दूसरे हाफ में कुनकुरी की टीम ने शानदार वापसी करते हुए लगातार दो गोल दागे। लेकिन खेल के अंतिम समय में नवानगर ने गोल कर 2-2 गोल की बराबरी पर ला दिया। और मैच का निर्णय ट्राईब्रेकर से किया गया।

आज के मैच के निर्णायक दया यादव, प्रकाश, चंद्रशेखर, पुनीत थे।

आज का मैच- इस प्रतियोगिता के तहत मंगलवार को दो मैच खेले जाएंगे। पहला मैच न्यू स्पोर्टिंग क्लब चरचा व बुढ़ा आमा (बतौली) तथा दूसरा मैच फुलचुही उदयपुर व फुटबॉल क्लब प्रतापपुर के मध्य खेला जाएगा।

CMYK

सूफी समूहों ने कड़ी सुरक्षा के बीच मनाया पैगंबर मोहम्मद का जन्मदिन,हाल ही दरगाहों पर बढ़े हमले

ढाका,16 सितम्बर 2024। बांग्लादेश के सूफी समूहों ने सोमवार को पैगंबर मोहम्मद के जन्मदिन को धूमधाम से मनाया। हाल ही में सूफी दरगाहों पर हुए हमलों के बाद सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी। दक्षिणपंथी समूहों ने दरगाहों को गैर-इस्लामी गतिविधियों का केंद्र बताया था।

राजधानी ढाका और अन्य प्रमुख शहरों में सड़कों पर सेना और अर्धसैनिक बल के जवान तैनात किए गए। जबकि पुलिस सूफी समूहों की रैली की अतिरिक्त निगरानी रख रही थी। सूफी समूहों ने दक्षिण पंथी इस्लामी संगठनों से मुस्लिम संतों का सम्मान करने की अपील की। उन्होंने उन संतों की भूमिका की याद दिलाई, जिन्होंने इस्लाम में प्रेम का प्रचार किया और आपसी सद्भाव को बढ़ावा दिया।

ईद-ए-मिलादुन नबी मार्च से पहले इस्लामी धर्मगुरु सैयद सैफुद्दीन अहमद ने कहा, जिन लोगों ने सूफी दरगाहों पर हमले किए हैं या उन स्थलों को जलाया है, हम उनसे ऐसी जघन्य गतिविधियों से दूर रहने का अनुरोध करते हैं।

सैफुद्दीन ने अंतरिम सरकार से आग्रह किया कि वह दरगाहों की सुरक्षा सुनिश्चत करे और जिन दरगाहों को नुकसान पहुंचा है, उन्हें पुनर्निर्मित किया जाए। उन्होंने कहा कि पैगंबर ने समावेशिता का प्रचार किया और कट्टरपंथ को अस्वीकार किया। उन्होंने कहा कि कट्टरपंथी अब सामाजित शांति और सद्भाव को नष्ट करने पर उतारू हैं। सूफी समूह पैगंबर मोहम्मद के जन्मदिन के दिन मिलादुन नबी मनाते हैं, जबकि दक्षिणपंथी इस्लामी समूह ऐसी प्रथाओं का विरोध करते हैं।

पिछले हफ्ते उत्तर-पूर्वी सिलहट में एक प्रसिद्ध सूफी संत शाह परान की दरगाह पर हमले की कड़ी निंदा हुई। सोशल मीडिया पर कई लोगों ने टिप्पणियां कीं कि छात्रों से प्रेरित आदोलन भेदभाव को तोड़ने को के लिए था। लेकिन अब दरगाहें, संस्कृति और सभ्यताएं टूट रही हैं।

इन घटनाओं के बाद अंतरिम सरकार के प्रमुख के कार्यालय ने सूफी दरगाहों और धार्मिक व सांस्कृतिक स्थलों पर नफरती भाषणों और हमलों को लेकर चेतावनी जारी की और कानून प्रवर्तन एजेंसियों को दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का आदेश दिया।

अफगान सैनिकों को यूक्रेन भेजना चाहता था ट्रंप पर हमला करने वाला; पाकिस्तान को बताया सबसे भ्रष्ट

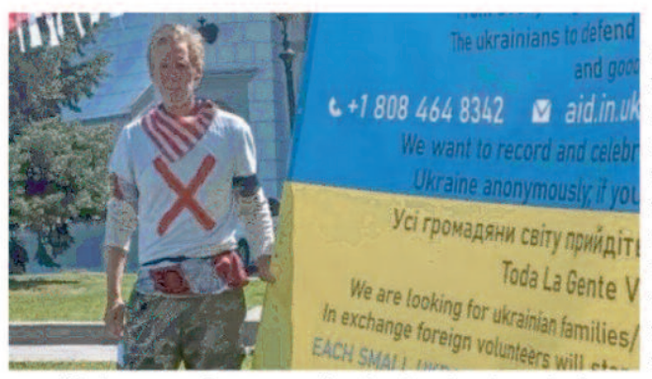

वॉशिंगटन, 16सितम्बर 2024। डोनाल्ड ट्रंप पर हमले के संदिग्ध आरोपी रेयान रूथ (58 वर्षीय) को लेकर चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। दरअसल साल 2023 में एक मीडिया इंटरव्यू में रेयान रूथ ने कहा था कि वह पाकिस्तान के रास्ते अफगान सैनिकों को यूक्रेन में लड़ने के लिए भेजने की योजना बना रहा। रूथ ने सोशल मीडिया पर कई ऐसे पोस्ट किए थे, जिसमें उसने रूस-यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन का खुलकर समर्थन किया था। यहां तक कि रूथ ने खुद भी यूक्रेन जाकर लड़ने की इच्छा जाहिर की थी।

रूथ ने साल 2023 में एक अमेरिकी न्यूज चैनल से बात करते हुए कहा था कि वह कुछ अफगान सैनिकों को पाकिस्तान और ईरान के रास्ते अवैध रूप से यूक्रेन भेजने की योजना बना रहा है। रूथ ने ये भी दावा किया था कि कई अफगान सैनिकों ने भी इसमें रुचि ली है। रूथ ने ये भी कहा कि हम पाकिस्तान के जरिए कुछ पासपोर्ट का इंतजाम कर सकते हैं क्योंकि पाकिस्तान एक भ्रष्ट देश है। रूथ का आपराधिक रिकॉर्ड भी है और वह कई बार राजनीति और विभिन्न मुद्दों पर सोशल मीडिया पर अपने विचार साझा करता रहा है। रूथ डेमोक्रेटिक पार्टी का समर्थक है और उसने साल 2019 में पार्टी को चंदा भी दिया था।

मुझे उनसे नफरत है,राष्ट्रपति चुनाव के लिए कमला हैरिस का समर्थन करने वाली टेलर स्विफ्ट पर ट्रंप का वार

वॉशिंगटन, 16 सितम्बर 2024। अमेरिका राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार कमला हैरिस का समर्थन करने पर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति और रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप ने गायिका टेलर स्विफ्ट पर हमला बोला है। ट्रंप ने कहा कि मुझे पॉप स्टार से नफरत है।

पॉप गायिका टेलर स्विफ्ट ने राष्ट्रपति चुनाव में कमला हैरिस और टिम वॉल्ज को वोट देने का एलान किया था। अमेरिकन गायिका टेलर स्विफ्ट ने कहा था कि आप में से कई लोगों की तरह मैंने भी आज बहस देखी। अगर आपने अभी तक नहीं देखी है, तो अब उन मुद्दों पर रिसर्च करने का एक अच्छा समय है जो आपके लिए सबसे अधिक मायने रखते हैं। एक मतदाता के तौर पर, मैं इस बात का ध्यान रखती हूं कि मैं इस देश के लिए उनकी प्रस्तावित नीतियों और योजनाओं के बारे में जितना हो सके उतना देखूं और पढ़ूं।

स्विफ्ट ने कहा था कि मैंने पूरी जांच पड़ताल की है। मैंने अपनी पसंद का चुनाव कर लिया है। आपको अपनी जानकारी खुद जुटानी है और फिर चुनाव करना है। मैं विशेष रूप से पहली बार मतदाताओं से कहना चाहती हूं कि याद रखें कि मतदान करने के लिए, आपको पंजीकृत होना होगा। मुझे यह भी लगता है कि जल्दी मतदान करना बहुत आसान है।

संविधान में संशोधन को फजल-उर-रहमान की पार्टी का समर्थन नहीं,संसद में बिल पेश करने से पीछे हटी सरकार

इस्लामाबाद, 16 सितम्बर 2024 । पाकिस्तान में संविधान संशोधन विधेयक एक बार फिर संसद में पेश नहीं किया जा सका। सरकार में सहयोगी मौलाना फजल-उर-रहमान के राजनीतिक दल जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम का समर्थन न मिलने से नवाज सरकार को बिल पेश करने से पीछे हटना पड़ा। हालांकि बिल में क्या संशोधन किया गया है, इसका सरकार ने खुलासा नहीं किया जा रहा है। माना जा रहा है कि बिल के जरिये सरकार जजों की सेवानिवृत्ति की उम्र बढ़ाने और सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश का कार्यकाल तय करने की योजना बना रही है।सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के सीनेटर इरफान सिद्दीकी ने बताया कि संशोधन विधेयक संसद में पेश नहीं किया जाएगा। जब हम विधेयक को पेश करने के लिए पूरी तरह से तैयार होंगे, तब इसे सत्र में लाया जाएगा। बिल पेश करने में देरी के सवाल पर इरफान बोले कि बिल एक या दो सप्ताह के भीतर पेश किए जाने की संभावना है। जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम (जेयूआई-एफ) के प्रमुख मौलाना फजल-उर-रहमान का समर्थन न मिलने के चलते सरकार को संसद में संशोधन विधेयक पेश करने में देरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा। दरअसल संशोधन विधेयक पारित करने के लिए सरकार को संसद में 224 और सीनेट में 64 वोटों की जरूरत है। जबकि संसद में गठबंधन की ताकत 213 और सीनेट में 52 है। आठ संसद सदस्यों और पांच सीनेटरों के साथ जेयूआई-एफ प्रमुख भूमिका में है। सरकार का दावा है कि अगर रहमान ने संशोधन का समर्थन किया, तो इसे दोनों सदनों में पारित कर दिया जाएगा क्योंकि सरकार ने पहले ही छोटे दलों का समर्थन जीत लिया है।

सिद्दीकी ने कहा कि प्रस्तावित कानूनों में से कुछ पर रहमान का मतभेद नहीं है। लेकिन उन्होंने बिल की समीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। सूत्र बताते हैं कि जेयूआई-एफ प्रमुख संशोधनों का समर्थन करते हैं लेकिन पूरे बिल का नहीं। वह चाहते हैं कि बिल में संशोधनों पर आम सहमति बनाने के लिए पीटीआई को भी बोर्ड में लिया जाना चाहिए।इस बीच नेशनल असेंबली की बैठक में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी ने न्यायपालिका को कमजोर करने की कोशिश के लिए सरकार की कड़ी आलोचना की। पीटीआई नेता असद क़ैसर ने संसद को रबर स्टांप के रूप में इस्तेमाल करने की कड़ी निंदा की। उन्होंने दावा किया कि कानून मंत्री को भी प्रस्तावित मसौदे की जानकारी नहीं है, तो अगर सरकार के किसी प्रतिनिधि को नहीं पता, तो यह दस्तावेज़ कहां से आया है?

उन्होंने कहा कि पीटीआई न्यायिक सुधारों के पक्ष में है, लेकिन इस तरह के सुधार को बहस और चर्चा के बाद पेश किया जाना चाहिए। वहीं कानून मंत्री आज़म नज़ीर तरार ने कहा कि विधेयक को अभी तक संघीय कैबिनेट के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया है। एक बार इसे संसद के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, तो इसके बारे में पता लगेगा।

कोर्ट का इमरान की पार्टी के सभी सांसदों को रिहा करने का आदेश

इस्लामाबाद, 16 सितम्बर 2024। पाकिस्तान की एक आतंकवाद रोधी अदालत (एटीसी) ने सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पीटीआई पार्टी के सभी गिरफ्तार सांसदों को तुरंत रिहा करने का आदेश दिया। इन सांसदों को आठ सितंबर को इस्लामाबाद में पार्टी के शक्ति प्रदर्शन के बाद संसद भवन से गिरफ्तार किया गया था।

एटीसी जज अबुल हसनत जुल्फिकार ने जमानत की याचिकाओं की सुनवाई की और पीटीआई के सांसदों को जमानत दी। इन सांसदों को इस्लामाबाद पुलिस ने हिरासत में लिया था। उनके खिलाफ संगजानी थाने में मामले दर्ज किए गए थे। जमानत के लिए प्रत्येक को 30 हजार रुपये के बॉन्ड की शर्त रखी गई थी।

सुनवाई के दौरान अभियोजक राजा नवीद ने अदालत को बताया कि सुन्नी इत्तेहाद काउंसिल के संसद मुहम्मद अहमद भी इस मामले में शामिल हैं। उन्होंने जमानत पर आपत्ति जताते हुए कहा कि मामले में न्यूनतम सजा सजा तीन साल की है। इसके बाद जज ने अभियोजक से सवाल किया- क्या शेर अफजल मरवत, अहमद और अन्य सांसदों से कुछ बरामद हुआ है? फिर अभियोजन ने इसका जवाब नहीं में दिया।

शेख हसीना के करीबी माने जाने वाले तीन पत्रकार पकड़े गए,सीमा से भारत भागने की कर रहे थे कोशिश

ढाका,16 सितम्बर 2024। बांग्लादेश से भारत भागने की कोशिश कर रहे तीन पत्रकारों और एक अन्य युवक को पुलिस ने उत्तरी मैमनसिंह सीमा के पास से पकड़ा।

प्रमुख पत्रकार मोजम्मेल बाबू, निजी एकटूर टीवी के मुख्य संपादक और भोरेर कागोज के संपादक श्यामोल दत्ता को सोमवार तड़के एक कार में भागने की कोशिश करते समय हिरासत में लिया गया। दोनों बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के करीबी माने जाते थे। पुलिस ने कहा कि हिरासत में लिए गए अन्य लोगों में एकटूर टीवी रिपोर्टर महबाबुर रहमान और ड्राइवर सेलिम शामिल हैं। उन्हें सुबह छह बजे मैमनसिंह जिले की धोबौरा सीमा की जीरो लाइन के पास पड़ोस के लोगों ने पकड़ा था। ग्रामीणों ने उन्हें मैमनसिंह पुलिस को सौंप दिया।

बताया जाता है कि बाबू और दत्ता दोनों पर स्थानीय लोगों ने हमला किया। लोगों ने पुलिस को बुलाने से पहले उनके पास मौजूद पैसे छीन लिए। पुलिस ने कहा कि वे हमारी हिरासत में हैं और पुलिस स्टेशन में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। मैमनसिंह पुलिस आवश्यक कानूनी प्रक्रियाओं के लिए उन्हें ढाका ले जाने के लिए संबंधित अधिकारियों का इंतजार कर रही है।

इससे पहले 21 अगस्त को ढाका में पुलिस ने एक अन्य पत्रकार दंपती फरजाना रूपा और शकील अहमद को फ्रांस भागने की कोशिश करते वक्त गिरफ्तार किया था। दंपती पर आरक्षण विरोधी छात्र आंदोलन के दौरान हत्या का आरोप लगा था।

बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के विरोध में हुए आंदोलन के बाद कई अन्य पत्रकारों के खिलाफ हत्या के आरोप में मुकदमे दर्ज किए गए हैं। इस पर अंतरराष्ट्रीय पत्रकार अधिकार समूहों ने चिंता जताई है।वहीं प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने संकेत दिया कि पत्रकारों के खिलाफ आरोपों की पूरी जांच होने तक उन्हें गिरफ्तार किए जाने की संभावना नहीं है।

नौकरियों में विवादास्पद कोटा प्रणाली के खिलाफ छात्रों द्वारा बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन शुरू होने के बाद से मरने वालों की संख्या 600 से अधिक हो गई है।

विश्वकर्मा जयंती को राज्य स्तरीय श्रमिक सम्मेलन का होगा आयोजन

» मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय 57 हजार श्रमिकों को 49.43 करोड़ राशि का डी.बी.टी. के माध्यम से करेंगे वितरण

- संवाददाता -

अंबिकापुर, 16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में प्रदेश के श्रमिकों के हित में अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। जिसका सीधा लाभ श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को मिल रहा है। 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय 'श्रमिक सम्मेलन' में 57 हजार से अधिक पंजीकृत श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को 49 करोड़ 43 लाख 52 हजार 294 रूपए केन्द्रीकृत डी.बी.टी. के माध्यम से वितरण करेंगे। यह कार्यक्रम राजधानी रायपुर के इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय परिसर जोरा के कृषि मंडप मे आयोजित होगा।

श्रम विभाग अधिकारी ने आज यहां बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा जिले के 4225 हितग्राहियों को 1 करोड़ 66 लाख 44 हजार रुपए की सहायता राशि डीबीटी के माध्यम से सीधे उनके बैंक खाते में अंतरित की जाएगी। इसमें मिनीमाता महतारी जतन योजना, मुख्यमंत्री सायकल सहायता योजना, मुख्यमंत्री श्रमिक औजार सहायता योजना, मुख्यमंत्री नौनिहाल छात्रवृत्ति योजना, मुख्यमंत्री नोनी बाबू मेधावी शिक्षा सहायता योजना, मुख्यमंत्री निर्माण मजदूर सुरक्षा उपकरण सहायता योजना, मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक मृत्यु एवं दिव्यांग सहायता योजना, मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना, और निर्माण श्रमिकों के बच्चों हेतु निःशुल्क गणवेश एवं पुस्तक कॉपी सहायता राशि भुगतान योजना के अंतर्गत सहायता राशि का डी.बी.टी. के माध्यम से वितरण करेंगे।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग,(वि/यां)संभाग अम्बिकापुर ,जिला सरगुजा (छ0ग0)

निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक/3300/ NIT-7/ 2024-2025/व.ले.लि — दिनांक 11/09/2024

निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि:-19/ 09/ 2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
ठे केदारों द्वारा प्रस्तुत निविदाएं प्राप्त करने की अंतिम तिथि :- 26/ 09/ 2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि :-27/ 09/ 2024 पूर्वान्ह 11.30 बजे तक

कार्य हेतु:-

निविदा प्रपत्र का मूल्य :-750.00 रूपए,निविदाकारों की श्रेणी:-ई-पंजीयन के अंतर्गत ''द'' से ''अ'' तक तथा कार्य करने की अवधि दिनांक 31.03.2025 तक वर्षा ऋतु सहित निर्धारित है।

एनआईटी क्रं7 निविदा कं	कार्य का नाम No Of Calls (प्रथम आमंत्रण)	कार्य की अनुमानित लागत(लाख में) अमानत राशि(रू.में) बैंक साल्वेंसी(रू.में)
1	2	3
T0063	सूरजपुर जिले में ब्लाक सूरजपुर के अंतर्गत शासकीय एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0064	सूरजपुर जिले में ब्लाक सूरजपुर एवं भैयाथान के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0065	सूरजपुर जिले में ब्लाक प्रतापपुर एवं ओड़गी के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0066	सूरजपुर जिले में ब्लाक प्रेमनगर एवं रामानुजनगर के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0067	सरगुजा जिले में ब्लाक अम्बिकापुर के अंतर्गत शासकीय-एडमिनिस्ट्रेटिव भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0068	सरगुजा जिले में ब्लाक मैनपाट एवं बतौली के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0069	सरगुजा जिले में ब्लाक सीतापुर एवं लुण्ड्रा के अंतर्गत शासकीय-आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0070	सरगुजा जिले में उपसंभाग अम्बिकापुर के अंतर्गत शासकीय-आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0071	बलरामपुर जिले में ब्लॉक बलरामपुर के अंतर्गत शासकीय एडमिनिस्ट्रेटिव भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0072	बलरामपुर जिले में ब्लॉक रामानुजगंज के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0073	बलरामपुर जिले में ब्लॉक कुसमी के अंतर्गत शासकीय-गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0074	बलरामपुर जिले में ब्लॉक वाड्रफनगर,रामानुजगंज एवं बलरामपुर के अंतर्गत शासकीय आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0075	जशपुर जिले में ब्लॉक जशपुर के अंतर्गत शासकीय एडमिनिस्ट्रेटिव भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0076	जशपुर जिले में ब्लॉक कुनकुरी दुलदुला एवं पत्थलगांव के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0077	जशपुर जिले में ब्लॉक बगीचा एवं सन्ना के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0078	जशपुर जिले में उपसंभाग जशपुर के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0079	कोरिया जिले में उपसंभाग कोरिया के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0080	कोरिया जिले में उपसंभाग कोरिया के अंतर्गत शासकीय आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0081	जिला एमसीबी में उपसंभाग एमसीबी के अंतर्गत शासकीय गैरआवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0082	जिला एमसीबी में उपसंभाग एमसीबी के अंतर्गत शासकीय आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0083	जिला एमसीबी में ब्लाक चिरमिरी एवं भरतपुर के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00
T0084	जिला एमसीबी में ब्लाक मनेन्द्रगढ़ के अंतर्गत शासकीय गैर आवासीय भवनों में विद्युतीकरण का संधारण मरम्मत एवं रख-रखाव का कार्य।	5.00-5000.00-75000.00

निविदा संबंधी शर्तें विभागीय वेबसाईट www. cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत निविदा प्रपत्र में उपलब्ध है। इनका अवलोकन संबंधित संभाग कार्यालय में किया जा सकता है।

जी. नम्बर
242502473/1

कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग (वि./यां) संभाग
अम्बिकापुर जिला सरगुजा (छ.ग.)

मानसून की विदाई से पहले जरूर करें इन 5 जगहों की सैर

नई दिल्ली

हरी-भरी वादियां,झरनें और नदियों का नजारा हर किसी का मन मोह लेता है। अगर आप भी प्रकृति को करीब से महसूस करना चाहते हैं और इन दिनों घूमने के लिए कुछ शानदार जगहें ढूंढ रहे हैं, तो ये आर्टिकल आप ही के लिए है। आइए जानें भारत की ऐसी 5 बेहतरीन डेस्टिनेशन्स के बारे में जहां मानसून खत्म होने से पहले ही आपको घूम लेना चाहिए।

केरल

बरसात के मौसम में केरल और भी ज्यादा खूबसूरत हो जाता है। चाय के हरे-भरे बागान शांत बैकवॉटर और ऊंचे-ऊंचे पहाड़, केरल को प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग बना देते हैं। आप यहां हाउसबोट में सैर कर सकते हैं, स्थानीय लोगों से मिल सकते हैं और केरल के पारंपरिक व्यंजन का स्वाद भी ले सकते

महाबलेश्वर

प्रकृति प्रेमियों के लिए महाराष्ट्र का प्रसिद्ध हिल स्टेशन, महाबलेश्वर भी किसी स्वर्ग से कम नहीं होता है। यहां की हरी-भरी वादियां और शांत वातावरण आपको शहर की भागदौड़ से दूर ले जाएंगे, जिससे आप प्रकृति के करीब जाकर शांति का एहसास कर सकते हैं।

हमेशा के लिए यादगार बन जाएगी ट्रिप

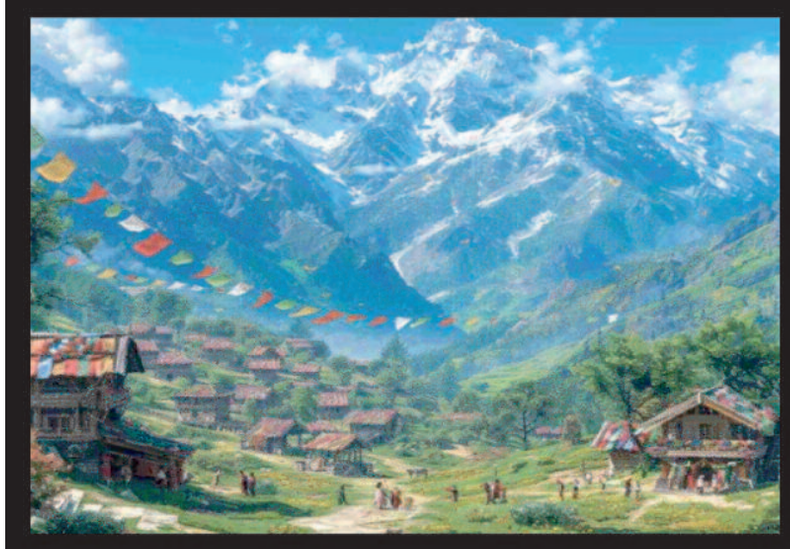

शिमला

बरसात के मौसम में शिमला की पहाड़ियां प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं हैं। हरी-भरी वादियों, झरनों और नदियों का मनमोहक नजारा आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाएगा। शिमला की ठंडी हवा और ताज़ी बारिश की बूंदें आपके मन को शांत कर देंगी। अगर आप प्रकृति के करीब जाकर शांति का अनुभव करना चाहते हैं, तो शिमला आपके लिए सबसे बेहतरीन ऑप्शन है।

कसौल

बरसात के मौसम में कसौल का नजारा देखने लायक होता है। हरे-भरे देवदार के पेड़ों से घिरे, कसौल का यह छोटा सा हिल स्टेशन प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है। पहाड़ों से गिरते झरने और खूबसूरत नदियां इस जगह की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। कसौल में आप ट्रेकिंग, कैम्पिंग और मछली पकड़ने जैसी कई एक्टिविटीज का लुत्फ उठा सकते हैं।

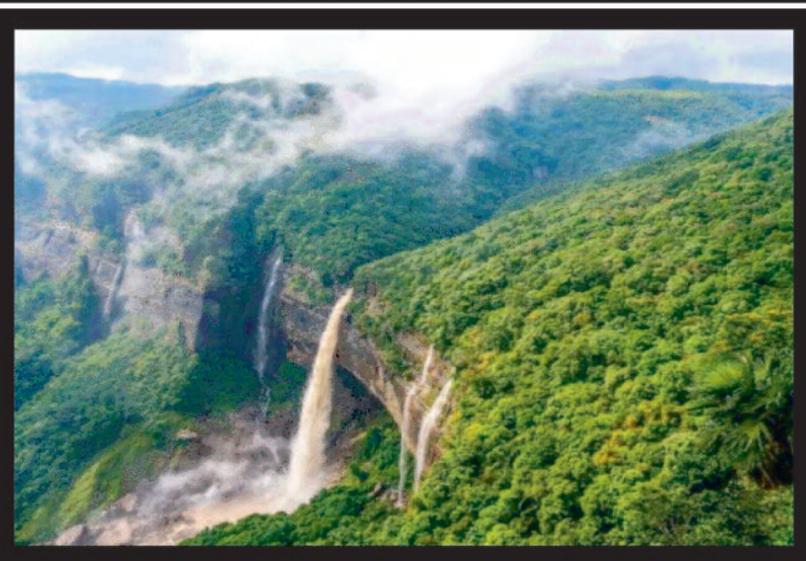

मेघालय

अगर आप हरे-भरे पहाड़ों, शांत झरनों और खूबसूरत प्रकृति के बीच कुछ समय बिताना चाहते हैं, तो मेघालय आपके लिए एकदम सही जगह है। बरसात के मौसम में मेघालय का नजारा देखने लायक होता है। हरी-भरी वादियां, शांत झीलें और ऊंचे-ऊंचे पहाड़ आपको एक अलग ही दुनिया में ले जाएंगे।

पितृ पक्ष के पहले दिन दुर्लभ शिववास समेत बन रहे हैं ये 6 अद्भूत योग,प्राप्त होगा अक्षय फल

आश्विन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से लेकर अमावस्या तिथि तक पितृ पक्ष मनाया जाता है। इस वर्ष पितृ पक्ष की शुरुआत 18 सितंबर से हो रही है। 18 सितंबर को चंद्र ग्रहण भी लगने वाला है। चंद्र ग्रहण के बाद पितरों का तर्पण किया जाएगा। ज्योतिषियों की मानें तो पितृ पक्ष के प्रथम दिवस पर दुर्लभ शिववास योग समेत कई मंगलकारी शुभ संयोग बन रहे हैं। इन योग में पितरों का तर्पण करने से व्यक्ति को अक्षय फल की प्राप्ति होगी। इसके साथ ही व्यक्ति को पितरों का भी आशीर्वाद प्राप्त होगा। आइए पितृ पक्ष के प्रथम दिवस पर बनने वाले शुभ योग के बारे में जानते हैं-

शुभ मुहूर्त

वैदिक पंचांग के अनुसार, अश्विन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि 18 सितंबर को सुबह 08 बजकर 05 मिनट से शुरू हो रही है। वहीं, इस तिथि का समापन 19 सितंबर को सुबह 04 बजकर 19 मिनट पर होगा।

शिववास योग

पितृ पक्ष के पहले दिन सुबह 08 बजकर 05 मिनट से शिववास योग का निर्माण हो रहा है। इस योग का समापन 19 सितंबर को सुबह 04 बजकर 19 मिनट पर होगा। इस दौरान देवों के देव महादेव कैलाश पर मां गौरी के साथ विराजमान रहेंगे। इस दौरान पितरों का तर्पण करने से पूर्वजों को मोक्ष की प्राप्ति होगी।

करण

अश्विन माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि पर बव, बालव और कौलव करण के योग बन रहे हैं। इन योग में पितरों का तर्पण कर सकते हैं। इसके साथ ही पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का भी संयोग बन रहा है। इन शुभ योग में पितरों का तर्पण करने से साधक को अक्षय फल की प्राप्ति होगी।

पंचांग

सूर्योदय - सुबह 06 बजकर 08 मिनट पर

सूर्यास्त - शाम 06 बजकर 22 मिनट पर

चन्द्रोदय- शाम 06 बजकर 37 मिनट पर

चंद्रास्त- नहीं...

ब्रह्म मुहूर्त - सुबह 04 बजकर 34 मिनट से 05 बजकर 21 मिनट तक

विजय मुहूर्त - दोपहर 02 बजकर 17 मिनट से 03 बजकर 06 मिनट तक

गोधूलि मुहूर्त - शाम 06 बजकर 22 मिनट से 06 बजकर 46 मिनट तक

निशिता मुहूर्त - रात्रि 11 बजकर 52 मिनट से 12 बजकर 39 मिनट तक

क्या वाकई कई बीमारियों को ठीक कर सकता है अनार ?

एक अनार सौ बीमार वाली कहावत तो आप सभी ने सुनी होगी लेकिन क्या आप जानते हैं कि सचमुच में अनार कितना फायदेमंद है. फलों का राजा भले ही आम को माना जाता है लेकिन अनार रामबाण है। अनार में एक नहीं, कई गुणकारी तत्व पाए जाते हैं। इसके दानों से लेकर रस और छिल्के तक जबरदस्त लाभकारी हैं। इसे खाने से कई तरह की बीमारियां शरीर से दूर रहती हैं. अक्सर आपने देखा भी होगा कि बीमारी में या इससे ठीक होने के बाद ज्यादातर लोगों को अनार खिलाया जाता है। आइए जानते हैं इसके क्या-क्या फायदे हैं और यह किस-किस बीमारियों को ठीक कर सकता है...

अनार की ताकत क्या है

अनार में काफी मात्रा में आयरन पाया जाता है, जो शरीर में हिमोग्लोबिन को बढ़ाता है। बीमारी में आयरन कम हो जाता है, इसलिए डॉक्टर अनार खिलाने की सलाह देते हैं। इसके अलावा अनार के दानों में कार्बोहाइड्रेट, मैग्नीशियम, पोटैशियम, आयरन, टेनिन, विटामिन्स कूट-कूटकर भरे होते हैं। आयुर्वेद में तो अनार के दाने, पत्ते, जड़, फूल, बीज के छिलके भी गुणकारी माने गए हैं।

अनार इन बीमारियों में फायदेमंद

चेहरे की रौनक बढ़ाए

अनार के छिलकों को सुखाकर पाउडर बनाएं। इसमें थोड़ा सा गुलाब जल मिलाकर मुंह पर लगाएं। थोड़ी देर बाद मुंह धोएं। हफ्ते में तीन बार ऐसा करने से चेहरे की रौनक लौट आती है और डलनेस खत्म होती है।

पेट दर्द से छुटकारा

अनार के आधे कप रस में काली मिर्च और नमक डालकर पीने से पेट दर्द से छुटकारा मिल सकता है। 10-15 ग्राम अनार के सूखे छिलके पीसकर उसमें दो लौंग पाउडर मिलाकर पानी में उबालें। जब आधा पानी रह जाए तो तीन खुराक दिन में पिएं। इससे दस्त से आराम मिल सकता है।

खांसी ठीक करे

10 ग्राम अनार के छिलके में 2 ग्राम नमक को मिलाकर पीसकर शहद के साथ चाटने से खांसी चुटकी में दूर हो सकती है। नाक में अनार का जूस डालने से खून आना बंद हो सकता है। 8 ग्राम अनार के छिलके का चूर्ण पानी के साथ पीने से खूनी बवासीर से आराम मिल सकता है।

घबराहट कम करे

60-70 ग्राम अनारदाना, 20 दाने काली मिर्च, आधा चम्मच भुना जीरा, एक चुटकी भुनी हींग, दो चुटकी सेंधा नमक को पीसकर पाउडर बना लें। इसे आधा चम्मच खाने से घबराहट और जी मिचलाने की समस्या खत्म हो सकती है।

पायरिया में फायदेमंद

दांतों से खून निकल रहा है यानी पायरिया है तो अनार के सूखे फूल बारीक पीसकर मंजन की तरह दिन में 2-3 बार करें। इससे दांतों से खून आना बंद हो जाएगा और दांतों को मजबूती भी मिल सकती है।

भूख बढ़ाए,खाना पचाए

अगर किसी को कम भूख लगती है या पाचन से जुड़ी कोई समस्या है तो अनार के दाने फायदेमंद हो सकते हैं। सेंधा नमक, काली मिर्च, जीरा, हींग को पीसकर पाउडर बनाएं और उसका सेवन करते रहें। पाचन ठीक करने के लिए तीन चम्मच अनार के रस में एक चम्मच जीरा और गुड़ मिलाकर खाने के बाद लें। इससे काफी राहत मिलेगी।

पेट में कीड़ों की समस्या खत्म करे

अगर पेट में कीड़े हैं तो अनार के छिलके इन्हें खत्म कर सकते हैं। अनार के सूखे छिलकों के पाउडर को एक चम्मच में लेकर दिन में तीन बार पानी के साथ लें। पेट के कीड़े खत्म हो सकते हैं। यह पाउडर पीडियड्स की समस्या में ज्यादा ब्लीडिंग में भी लाभकारी होता है।

CMYK

चिरमिरी वासियों को पट्टा दिलाने तक संघर्ष जारी रहेगाः डोमरू रेड्डी

अपने महापौर कार्यकाल से अब तक प्रत्येक कलेक्टर से मिलकर,निरंतर मांग करते रहे हैं...

कलेक्टर से बातचीत कर,अपने क्षेत्र के लोगों को पट्टा दिलाने की अटकी हुई प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए पूर्व महापौर लगातार हैं सक्रिय

चिरमिरी एसईसीएल की 10 हेक्टेयर जमीन चिन्हित कर वापसी के लिए कलेक्टर कार्यालय को भेजा गया प्रस्ताव अभी भी लंबित है...

-रवि सिंह-
चिरमिरी,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
एसईसीएल कोलफील्ड्स के चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र के निवासियों को उनके पुराने घरों और दुकानों का मालिकाना हक दिलाने के लिए सतत प्रयासरत पूर्व महापौर के. डोमरु रेड्डी ने एमसीबी जिले के कलेक्टर श्री डी. राहुल वेंकट से मुलाकात की। अपने शहर के स्थायित्व के लिए बनाई गई लंबी और सुव्यवस्थित योजना के तहत उन्होंने अपने प्रयासों को जारी रखा है। इस दौरान उन्होंने राज्य शासन को एसईसीएल की निष्क्रिय भूमि को चिन्हित कर उसे शासन के अधीन वापस कराने के लिए सहमति दी और इस पर निर्देश जारी कराए।

उन्होंने कलेक्टर को याद दिलाया कि सरगुजा क्षेत्र और आदिवासी विकास प्राधिकरण की 03 जून 2019 की बैठक में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने एसईसीएल की अनुपयोगी भूमि को छत्तीसगढ़ शासन को वापस दिलाने का निर्देश दिया था। इसका विवरण आयुक्त कार्यालय (प्राधिकरण प्रकोष्ठ) के पत्र क्रमांक 1613/सविप्रा/2019-20 अंबिकापुर दिनांक 19 जून 2019 के तहत कलेक्टर कोरिया को भेजा गया था। इसके बावजूद आज तक कलेक्टर कोरिया कार्यालय से पालन प्रतिवेदन नहीं भेजा जा सका है। चिरमिरी एसईसीएल ने अपने लीज की 294 हेक्टेयर जमीन चिन्हित कर वापसी के लिए कलेक्टर कार्यालय को प्रस्ताव भेज दिया है, जो जिला स्तर पर अब भी लंबित है।

यह सिर्फ राजनीतिक मुद्दा नहीं है

पूर्व महापौर ने एमसीबी कलेक्टर श्री राहुल वेंकट से आग्रह किया कि इस मामले को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए एक विशेष टास्क फोर्स का गठन करें, क्योंकि यह सिर्फ राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि चिरमिरी और अन्य शहरों के अस्तित्व और पलायन का गंभीर मुद्दा है, जिसे समय रहते हल करना जरूरी है।

श्री रेड्डी ने कलेक्टर को याद दिलाया

श्री रेड्डी ने कलेक्टर को याद दिलाया कि चिरमिरी और अन्य क्षेत्रों में 70-80 वर्षों से रह रहे लोगों को पट्टा दिलाने के लिए उनके द्वारा 2015 से लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि जिले में अलग-अलग कलेक्टरों से समय-समय पर संपर्क कर इस मुद्दे को आगे बढ़ाने की कोशिश की गई है, लेकिन अधिकारियों के बार-बार स्थानांतरण के कारण प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पाई है। महापौर रेड्डी की मांग पर, 09 अगस्त 2017 को चिरमिरी में संभाग आयुक्त की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें एसईसीएल के अधिकारी और मंत्रीगण उपस्थित थे। इसके अलावा, तत्कालीन मुख्यमंत्री के निर्देश पर आयुक्त सरगुजा संभाग का पत्र क्रमांक 3308/ एसईसीएल/ स.उ.क्षे.आ.वि.प्रा./2017 अंबिकापुर दिनांक 04.10.2017 और कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला कोरिया के पत्र क्रमांक 8303/खनिज एसईसीएल स.उ.क्षे.आ.वि.प्रा./2017 कोरिया, बैकुंठपुर दिनांक 04.10.2019 के संलग्न पत्रों से भी स्पष्ट है कि चिरमिरी में एक उच्च स्तरीय बैठक के बाद कलेक्टर कोरिया की अध्यक्षता में 08 अधिकारियों की जिला स्तरीय समिति का गठन हुआ था। इस समिति ने शासन और एसईसीएल प्रबंधन को आगे की कार्यवाही के लिए रिपोर्ट भेजी थी, लेकिन उसकी प्रगति की निगरानी न होने के कारण कार्यवाही ठप हो गई।

आवाज दो हम एक हैं...नारों के साथ 2 अक्टूबर को राजधानी में होगी पत्रकारों की गूंज...

पत्रकारों पर अत्याचार अब बर्दास्त नहीं:संयुक्त पत्रकार मोर्चा

राजधानी में पत्रकारिता संकल्प महासभा को लेकर पत्रकार संगठन के पदाधिकारी एवं वरिष्ठ पत्रकारों के साथ बैठक हुआ संपन्न ...

पत्रकारिता संकल्प महासभा के लिए 2 अक्तूबर को होंगे सभी संगठन एक मंच पर...

पत्रकारों के हित में आर-पार की लडाई लड़ने के लिए तैयार पत्रकार संगठन...

-आदित्य गुप्ता -
अम्बिकापुर/रायपुर,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
रायपुर । राज्य में लगातार पत्रकारों पर हो रहे उत्पीड़न मामले तथा पत्रकारिता पर हो रहे प्रहारों से निराकरण को लेकर राज्य के कई बड़े पत्रकार संगठनों के प्रदेश अध्यक्षों ने शनिवार 14 सितंबर को राजधानी रायपुर में संयुक्त बैठक संपन्न हुई । जिसमे तकरीबन 20 पत्रकार संगठनों के प्रदेश अध्यक्ष तथा बहुतायत में वरिष्ठ पत्रकार इस बैठक में मुख्य रूप से शामिल हुए। उपस्थित समस्त पत्रकार संगठनों के प्रदेश अध्यक्ष तथा वरिष्ठ पत्रकारों ने पत्रकारिता पर हो रहे प्रहारों तथा पत्रकारों पर आए दिन हो रहे झूठे मुकदमों एवं उन पर हो रहे जानलेवा हमले को लेकर शासन प्रशासन , राजनीतिज्ञों, माफियाओं पर प्रहार करते हुए गहरा रोष प्रकट किया। सभी संघों के प्रमुखों ने सामूहिक मंच पर अपने अपने विचार रखे और समाधान पर गंभीरता से चर्चा की। और सभी ने एकमतेन सामूहिक रूप से पत्रकारों के हित में आर-पार की लडाई लड़ने पर सहमति जताई। जिसके परिणाम स्वरूप समस्त संगठन के उपस्थित पदाधिकारियों की एक 'संचालक समिति' का गठन किया गया। जो पत्रकारों के हित के लिए सदैव तत्पर रहेगी और उनकी हर लड़ाई मे संयुक्त रूप से मोर्चा संभालेगी।

राजधानी में छत्तीसगढ़ में कार्यरत सभी पत्रकार संगठनों के प्रदेश अध्यक्षों की संयुक्त बैठक में पत्रकारों के हित में लिए गये महत्वपूर्ण निर्णय

बैठक में संयुक्त समिति के गठन के पश्चात पत्रकारों को लेकर कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई, जिसमें पत्रकार सुरक्षा कानून विधेयक पारित कराने से लेकर, पत्रकार कल्याण कोष, स्वास्थ्य सुविधाएं, स्वास्थ्य एवं दुर्घटना बीमा, अधिमान्यता में सरलीकरण के अलावा, छोटे मझोले अखबारों को चलाने में सहायक शासन द्वारा मिलने वाले विज्ञापन के बंद किये जाने, हित संवर्धन व सुरक्षा एवं विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। उपस्थित संगठनों के पदाधिकारियों ने क्रमानुसार अपने विचारों को साझा किया। यह समिति पूरी ताकत से एक होकर पत्रकारों के हित व न्याय की लड़ाई साथ लड़ेंगी। सभी पत्रकारों ने एकजुटता का परिचय देते हुए आगामी 02 अक्टूबर को होने वाले कार्यक्रम के लिए अपना समर्थन दिया। इस कड़ी में आगामी 2 अक्टूबर को सभी पत्रकार संघ एकजुटता दिखाते हुए संयुक्त रूप से एक मंच उपस्थित रहकर पत्रकारों की आवाज बुलंद करेंगे।

2 अक्टूबर को राजधानी में 'पत्रकारिता संकल्प' सभा में संकल्प लेंगे पत्रकार...

2 अक्टूबर 2024 को 'पत्रकारिता संकल्प' सभा का आव्हान किया जाएगा, जिसमे राज्य भर से विभिन्न स्थानों से संगठनों से जुड़े पत्रकारगण इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शिरकत करेंगे। आयोजित इस बैठक में मुख्य रूप से बैठक के संयोजक सुधीर तंबोली आजाद, पत्रकार सुरक्षा कानून संयुक्त मोर्चा के संयोजक कमल शुक्ला, छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट यूनियन से प्रदेश अध्यक्ष ब्यास पाठक एवं शिवशंकर सोनपिपरे, इंडियन जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष पी सी रथ, छत्तीसगढ़ सक्रिय पत्रकार संघ से प्रदेश अध्यक्ष राज गोस्वामी, कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मनोज सिंह बघेल, सचिव मनीष कुमार शर्मा, राहुल गोस्वामी, छ.ग. जर्नलिस्ट वेलफेयर यूनियन से प्रदेश अध्यक्ष अमित गौतम एवं उपाध्यक्ष महेश आचार्य, पत्रकार महासंघ छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष सुनील कुमार यादव , प्रेस एंड मीडिया वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष मनोज पाण्डे, उपाध्यक्ष राजेन्द्र गुप्ता, स्टेट वर्किंग जर्नलिस्ट्स यूनियन छत्तीसगढ़ से प्रदेश महासचिव विरेंद्र कुमार शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष घनश्याम गुप्ता, पत्रकार कल्याण महासंघ छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष सेवक दास दीवान ,महासचिव प्रवीण करे, कार्यसमिति सदस्य दिनेश नामदेव, छत्तीसगढ़िया पत्रकार महासंघ से प्रदेश महासचिव मो. समीम, अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति से मो. नजीर, अजित शर्मा, पवन सिंह ठाकुर, दिनेश कुमार, रमेश कुमार , सहित वरिष्ठ पत्रकार अजीत कुमार सिंह सहित बहुतायत में पत्रकार साथी उपस्थित थे।

पटना को नगर पंचायत बनाए जाने के विरोध में की जा रही अनिश्चितकालिन धरना प्रदर्शन 20 दिनों बाद हुआ समाप्त

विधायक भईयालाल राजवाड़े व धरना प्रदर्शन करते समिति के सदस्य व ग्रामीण से किया मुलाकात

मुलाकात मुख्यमंत्री से करा कर सभी मांगों को विधायक द्वारा पूरा कराए जाने के आश्वासन पर धरना प्रदर्शन व भूख हड़ताल को ग्राम पंचायत बचाव संघर्ष समिति ने की समाप्त

-संवाददाता-
कोरिया/पटना,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
नगर पंचायत बनाए जाने का विरोध करते हुए ग्राम पंचायत बचाव संघर्ष समिति द्वारा पंचायत भवन के सामने 20 दिनों से की जा रही अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन व 8 दिनों से चल रहे क्रमिक भूख हड़ताल आज 16 सितम्बर को विधायक भईया लाल राजवाड़े द्वारा पहुंचकर सभी मांगों को पूरा कराने के लिए मुख्यमंत्री से 18 सितम्बर को मुलाकात कराने के आश्वासन पर समाप्त किया गया।

जानकारी देते हुए ग्राम पंचायत बचाव संघर्ष समिति के विजय सिंह ठाकुर, सूर्य प्रताप सिंह नेताम, राकेश प्रताप सिंह, आदिम जाति सेवा सहकारी समिति अध्यक्ष विजय सिंह, सुरेश सिंह, अरविन्द सिंह, मनोज सिंह ने बताया कि ग्राम पंचायत पटना को असंवैधानिक रूप से नगर पंचायत बना दिया गया जिसके विरोध में 27 अगस्त से अनिश्चितकालिन धरना प्रदर्शन प्रारंभ हुआ था और 8 अगस्त से भूख हड़ताल शुरू किया गया था, इस बीच समिति के पदाधिकारी मंडल द्वारा विधायक को ज्ञापन भी सौंपा गया था और 16 सितम्बर को धरना स्थल पर विधायक भईया लाल राजवाड़े पहुंचे और विरोध प्रदर्शन एवं अन्य मांगों को जायज बताते हुए उन्होंने कहा कि आपके सभी मांगों को पूरा कराने के लिए मैं 18 सितम्बर को समिति के प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात मुख्यमंत्री से कराउंगा आप सभी धरना प्रदर्शन एवं भूख हड़ताल समाप्त कर दें इसके बाद विधायक भईया लाल राजवाड़े के आश्वासन पर 20 दिनों से जारी अनिश्चितकालिन हड़ताल और भूख हड़ताल समाप्त कर दिया गया।

खड़गवां थाने में काम कम-वसूली ज्यादा क्या सेटिंग में चल रहा राम राज ?

खड़गवां थाने में काम कम वसूली ज्यादा,सेटिंग में चल रहा राम राज क्या खड़गवां

-राजेन्द्र शर्मा-
खड़गवां,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
थाना क्षेत्र में इन दिनों सेटिंग का बोलबाला है । यंत्र तंत्र सर्वत्र मौजूद रहने वाले पुलिसिया खौफ से अपराध मिटाने का हथियार बनाने के बजाय यहां जेब भरने का जरिया बना लिया गया है । लंबे समय से अवैध धंधों, में गांजा शराब के संचालन में पुलिस की भूमिका संदेहास्पद रही है। सूत्रों ने इन अवैध धंधों के मास्टरमाइंड कहते हैं कि हम बकायदा पुलिस को मुंहमांगी प्रोटेक्शन मनी देते हैं ऐसे में पुलिसिया कार्यवाही का भय समाप्त होने से इन अवैध कार्यो को करने वालों के हौसले बुलन्द है। जिससे नए अपराधों के अंकुरण का मार्ग साफ हो जाता है ।

चोरों की भी है मौज,कई चोरियों का आज तक नही हुआ खुलासा

क्षेत्र में चोरों की भी मौज है । कई छोटी बड़ी चोरियों के मामले में पुलिस के हाथ आज भी खाली हैं । शराब पीते ग्रामीणों को पकड़ कर वाहवाही करने में सफल है खड़गवां थाना गेट के सामने कपड़े की दुकान में हुई थी चोरी उसी रात दो अन्य जगह पर भी चोरी हुई थी। सूत्रों से ये जानकारी भी मिली है कि जिनके यहां चोरी कि वारदात हुई थी उनकी रिपोर्ट भी दर्ज नहीं कि गई थी इससे सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि स्थानीय जनता कि सुरक्षा खड़गवां पुलिस कितने सही रूप से कर रही है ? चोरों को पकड़ने चोरी के मामले थाने में आज भी लंबित है जिस पर किस तरह की और क्या कार्यवाही की गई इसका अता पता नही है?

अवैध धंधे गांजा शराब बने सोने के अंडे देने वाली मुर्गी

क्षेत्र में गांजा शराब ग्रामीण क्षेत्रों में इस कदर अपने पैर पसार चुका है कि समीपस्थ जिलों से भी लोग बड़े पैमाने पर अवैध गांजा शराब पहुंचने के खेल में लगे हैं। लाखों के वारे न्यारे जहा कर रहे हैं वहीं प्रोटेक्शन मनी के नाम पर पुलिस की जेब में भी वजन डाला जा रहा है जिससे अवैध गांजा शराब को रोकने के बजाय पुलिया का संरक्षण प्रदान कर अपराध और अपराधियों को बढ़ावा देने में लगी है

पूर्व की तरह नहीं हो रही कार्यवाही

इससे पूर्व थाना प्रभारी खड़गवां के द्वारा माह में लगभग तीन से चार प्रकरण अवैध नशे के कारोबार करने वालों पर ताबड़तोड़ कार्यवाही किया जाता था तब भी वहीं स्टाफ इस थाने में मौजूद था और आज भी वही स्टाफ मौजूद है फिर अवैध नशे के कारोबार पर अंकुश क्यों नहीं लग पा रहा है या खड़गवां पुलिस अंकुश लगाना नहीं चाहती है आखिर क्यों ? स्थानीय ग्रामीणों ने रात्रि गश्त पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं अगर रात्रि गश्त होती है तो कैसे एक ही रात में मुख्यालय में थाने के सामने चोरी कैसे हो गई खड़गवां क्षेत्र के ग्रामीण अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहे हैं ?

एसईसीएल के अधिकारी नकली पुलिस बनकर दें रहे थे लूट को अंजाम,जेल दाखिल

-संवाददाता-
कोरबा,16 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
कोरबा जिले के कटघोरा क्षेत्र अंतर्गत कटघोरा थाना में 14 सितम्बर दिन शुक्रवार को प्रातः 3 से 4 बजे के मध्य सूचना प्राप्त हुई की कटघोरा थाना क्षेत्र के ढेलवाडीह बायपास मार्ग पर कुछ लोगों द्वारा अपने आपको टीआई व पुलिस बताकर उनके द्वारा भारी वाहन रोककर वसूली की जा रही है। कटघोरा पुलिस की टीम तत्काल मौके पर पहुंचकर 5 लोगों को गिरफ्तार किया। प्रार्थी ट्रक मालिक अफसर अंसारी के ड्राइवर हार्दिक अंसारी पिता शेखवत अंसारी उम्र 44 वर्ष निवासी गढ़वा झारखंड ने कटघोरा थाना में लिखित शिकायत की है कि ट्रक क्रमांक सीजी 12 बीजे 6068 में रायपुर से चावल लोड कर फरबेसगंज बिहार जा रहा था। रात्रि लगभग 3:15 ढेलवाडीह बायपास जब वह पहूँचा तो उसी वक्त एक बोलेरो वाहन क्रमांक सीजी 12 बीजे 9852 जो सायरन बजाते हुए गाड़ी के पास आये और गाड़ी में 5 लोग उतरे और अपने आपको टीआई व पुलिस बताते हुए डराने धमकाने लगे। गाड़ी का पेपर व बिल्टी मांगने लगे। गाड़ी के सभी पेपर दिखाने के बाद वो मुझे जबरदस्ती गाड़ी से खींचकर बाहर निकालने लगे। सभी 5 लोग गाड़ी के कागजात सही नही कहते हुए मुझसे पैसे की मांग करने लगे। अगर पैसा नही दोगे तो जेल भेजने की बात करने लगे। उनके द्वारा उसके पास रखे 2000 नगद और उसके मोबाइल को भी छीन कर अपने पास रख लिए। और वो सभी एक दूसरे को साहब कहकर बुला रहे थे। हार्दिक अंसारी ने बताया कि वे लोग सड़क पर जा रहे सभी भारी वाहनों से वसूली कर रहे थे। जिसपर जिला पुलिस अधीक्षक को मामले की जानकारी दि गई जिसपर कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारी के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नेहा वर्मा व एसडीओपी पंकज ठाकुर के मार्गदर्शन में कटघोरा थाना प्रभारी धर्मनारायण तिवारी ने पकड़े गए पांचों आरोपियों पर अपराध पंजीबद्ध करते हुए धारा 126 (2), 119 (2), 310 (2) के तहत माननीय न्यायालय पेश कर न्यायिक रिमांड पर जेल दाखिल कर दिया है। पकड़े गए चार आरोपी एसईसीएल के अधिकारी व कर्मचारी है वही अन्य 1 और आरोपी शामिल होना पाया गया।

गिरफ्तार किये गए आरोपी - 1. मुकेश केशरवानी पिता प्रदीप केशरवानी उम्र 36 वर्ष निवासी केरा रोड थाना शिवरीनारायण जिला जांजगीर चांपा 2. अभिषेक मीणा पिता रामप्रसाद मीणा उम्र 26 वर्ष निवासी आदर्श नगर जयपुर, थाना सांगानेर जिला जयपुर राजस्थान 3.विकास मीणा पिता स्वर्गीय सतीश मीणा उम्र 28 वर्ष, निवासी सनसिटी सीकर, जयपुर राजस्थान 4. दिलीप कुमार यादव पिता परदेशीराम यादव उम्र 25 वर्ष निवासी सिंघाली बस्ती, थाना बांकीमोंगरा कोरबा 5. हरप्रसाद पटेल पिता स्वर्गीय संतोष पटेल उम्र 27 वर्ष निवासी बलगी थाना बांकीमोंगरा कोरबा।

संक्षिप्त खेल की खबरें

विश्व शतरंज को लेकर डिंग लिरेन का बयान

गुकेश जीत के दावेदार,मेरे खेल में गिरावट आयी

नईदिल्ली,16 सितंबर 2024। गत चैंपियन डिंग लिरेन का मानना है कि नवंबर में होने वाले विश्व शतरंज के

खिताब के लिए उनके भारतीय चैलेंजर डी गुकेश जीत के दावेदार हैं। डिंग लिरेन का मानना है कि, पिछले एक साल में उनके खेल में काफी 'गिरावट आयी है। बता दें कि, लिरेन और गुकेश इस समय यहां 45वें शतरंज ओलंपियाड में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। गुकेश, आर प्रज्ञानानंदा, विदित गुजराती और अर्जुन एरिगैसी की चौकड़ी से सजी भारतीय टीम वर्तमान में लिरेन के चीन और मेजबान हंगरी के साथ शीर्ष स्थान पर है। लिरेन ने अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (फिडे) के द्वारा आयोजित बातचीत में कहा, ''मैं अपने प्रतिद्वंद्वी (गुकेश) को इस टूर्नामेंट में बहुत अच्छा खेलते हुए देख रहा हूं। वह विश्व चैम्पियनशिप में शायद मुझ से ज्यादा जीत का दावेदार है। अभी उसकी रेटिंग भी मुझसे अधिक है।'' उन्होंने कहा, ''पिछले साल के मुकाबले में मेरे खेल में काफी गिरावट आयी है लेकिन लेकिन मैं रेटिंग के अंतर को पाटने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा।'' चीन का 31 साल का यह खिलाड़ी सर्वकालिक सर्वोच्च रेटिंग हासिल करने वाला शतरंज खिलाड़ी हैं। उन्होंने पिछले साल मई में रूस के ग्रैंडमास्टर इयान नेपोमनियाचची को हराकर वैश्विक खिताब का ताज जीता था। उन्हें हालांकि इसके बाद अवसाद से जूझने के कारण खेल से ब्रेक लेना पड़ा।लिरेन ने इस साल की शुरुआत में टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट में वापसी की और प्रतियोगिता में नौवें स्थान पर रहे।

बटलर के चोटिल होने के कारण ब्रुक ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे श्रृंखला में इंग्लैंड का नेतृत्व करेंगे

लंदन,16 सितंबर 2024। पिंडली की चोट के कारण जोस बटलर के टीम से बाहर होने के बाद हैरी ब्रुक ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला

में पहली बार इंग्लैंड की कप्तानी करेंगे। इस साल जून के अंत में गुयाना में भारत के खिलाफ टी 20 विश्व कप सेमीफाइनल में इंग्लैंड की हार के बाद से बटलर ने कोई प्रतिस्पर्धी मैच नहीं खेला है। उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय टीम में शामिल किया गया था लेकिन चोट से उबरने में विफल रहने के बाद वह टीम से बाहर हो गये है। पच्चीस साल के ब्रुक ने इंग्लैंड के लिए सिर्फ 15 वनडे मैच खेले है लेकिन टीम प्रबंधन उन्हें भविष्य के कप्तान के तौर पर देखता है। बटलर की अगुवाई में जब वनडे टीम की घोषणा की गयी थी तब उन्हें उपकप्तान घोषित किया गया था। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला का आगाज गुरुवार को ट्रेंट ब्रिज में होगा।

साउथ अफ्रीका की बराबरी के लिए तैयार टीम इंडिया

बांग्लादेश को हराते ही नया कीर्तिमान

नईदिल्ली,16 सितंबर 2024। भारत और बांग्लादेश के बीच 19 सितंबर से जो पहला टेस्ट शुरू होगा, वो कई मायनों में बहुत खास होने वाला है। इस बीच टीम इंडिया अगर बांग्लादेश को पहले ही टेस्ट में पटकनी देती है तो वो साउथ अफ्रीका की बराबरी पर पहुंच जाएगी। इसके साथ ही कुछ और कीर्तिमान बनते हुए नजर आ सकते हैं।

ऑस्ट्रेलिया है सबसे ज्यादा टेस्ट मैच जीतने वाली टीम

दरअसल टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाली टीम की बात की जाए तो वो ऑस्ट्रेलिया है। ऑस्ट्रेलिया ने अब तक कुल मिलाकर 414 टेस्ट मुकाबले जीते हैं। उसके अलावा कोई दूसरी टीम नहीं है, जिसने 400 से ज्यादा टेस्ट ना जीते हों। इसके बाद दूसरे नंबर पर इंग्लैंड की टीम आती है। उसने अब तक 397 टेस्ट मैच जीतने में कामयाबी हासिल की है।

वेस्टइंडीज ने भी जीते हैं भारत से ज्यादा टेस्ट मुकाबले

वेस्टइंडीज की टीम भी इस मामले में काफी आगे है। टीम ने अब तक कुल 183 टेस्ट मैच अपने नाम किए हैं। चौथे नंबर पर आती है साउथ अफ्रीका की टीम। साउथ अफ्रीका

ने अब तक 179 मैच जीते हैं। इस मामले में इसके बाद नंबर आता है भारतीय टीम का। भारत ने अब तक 178 मैच अपने नाम किए हैं। यानी उसे साउथ अफ्रीका की बराबरी के लिए एक मैच जीतना है, जो काम चेन्नई में हो सकता है।

भारत को चेन्नई में मिल सकती है 179 वीं जीत

भारतीय टीम चेन्नई टेस्ट जीतकर साउथ अफ्रीका के 179 जीत की बराबरी कर सकती है और इसके बाद इसी सीरीज का दूसरा मैच जो कानपुर में होना है, उसे भी जीतकर साउथ अफ्रीका को पीछे कर जीते हुए मैचों की संख्या 180 तक पहुंचा सकती है। खास बात ये भी है कि भारत ने अब तक 178 मैच जीते हैं और इतने ही मुकाबले हारे भी हैं। यानी जीत और हार बराबर हैं।

टीम इंडिया के हो सकते हैं हारे हुए मैचों से ज्यादा जीते हुए मैच

भारत के टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में ऐसा पहली बार होगा, जब भारत के जीते हुए मैच हारे हुए मैचों से ज्यादा हो जाएंगे, ये किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। इतना ही नहीं भारत अगर दोनों मैच जीतकर बांग्लादेश का सूपड़ा साफ करता है तो फिर उसे विश्व टेस्ट चैंपियनशिप प्वाइंट्स टेबल में भी जबरदस्त उछाल मिलेगा। जो उसे फाइनल तक ले जाने में सहायक साबित होगा।

अब चेन्नई पहुंचा टीम इंडिया का स्टार खिलाड़ी

नईदिल्ली,16 सितंबर 2024। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम इस वक्त चेन्नई में है। अब से केवल तीन दिन बाद ही भारत और बांग्लादेश के बीच टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला खेला जाएगा। पहले टेस्ट के लिए टीम इंडिया का ऐलान पहले ही कर दिया गया था। इसलिए सभी खिलाड़ी चेन्नई पहुंच चुके हैं। इस बीच जो प्लेयर्स भारतीय टीम में चुने गए थे, उन्होंने दलीप ट्रॉफी का भी दूसरा मैच मिस किया, लेकिन सरफराज खान दूसरा मैच खेल रहे थे। लेकिन अब वे भी चेन्नई पहुंच चुके हैं, ऐसी खबरें आ रही हैं। लेकिन सवाल यही है कि क्या वे पहले टेस्ट की प्लेइंग इलेवन में टीम इंडिया का हिस्सा होंगे।

दलीप ट्रॉफी का दूसरा मैच खेलकर चेन्नई पहुंचे सरफराज

सरफराज खान अकेले ऐसे खिलाड़ी हैं, जो बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए टीम में चुने गए हैं, लेकिन अभी तक चेन्नई नहीं पहुंचे थे। वे दलीप ट्रॉफी के मुकाबले में व्यस्त थे, ये बात और है कि उनके बल्ले से अपनी टीम के लिए कुछ खास रन नहीं निकले, लेकिन उन्हें मैच प्रैक्टिस तो मिल ही गई है। उन्हें दूसरे मैच की एक पारी खेलने के लिए मिली और वे केवल 16 ही रन बना सके। अब से चेन्नई में हैं, लेकिन इस बात की संभावना काफी कम है कि उन्हें पहले टेस्ट की प्लेइंग इलेवन में जगह मिलेगी।

सरफराज और केएल राहुल में से किसी एक को मिलेगा मौका

इसकी वजह ये है कि भारत का टॉप 4 तो करीब करीब तय है। रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल और विराट कोहली अपने अपने नंबर पर आएंगे। इसके बाद नंबर 5 की अगर बात करें तो यहां पर ही सरफराज का दावा है, लेकिन उनके साथ ही केएल राहुल भी इसी नंबर पर खेलने के दावेदार हैं। राहुल पहले से ही टीम इंडिया के साथ जुड़े हुए हैं, ऐसे में उनका प्लेइंग इलेवन में होना ज्यादा मजबूत लग रहा है। यानी हो सकता है कि टीम के साथ जुड़ने के बाद भी सरफराज खेलते हुए नजर ना आएं। क्योंकि नंबर पांच के बाद ऋषभ पंत आ जाएंगे, जो बतौर विकेटकीपर बल्लेबाज खेलते हुए दिखाई देंगे।

अब तक टीम इंडिया के लिए ऐसा रहा है सरफराज का प्रदर्शन

सरफराज के अब तक के टेस्ट करियर की बात की जाए तो उन्होंने भारत के लिए 3 टेस्ट की 5 पारियां खेलकर 200 रन बनाए हैं। यहां उनका औसत करीब 50 का है और वे 79 के स्ट्राइक रेट से रन बना रहे हैं। उन्होंने इस दौरान तीन अर्धशतक भी लगाए हैं। हालांकि बात अगर प्रथम श्रेणी क्रिकेट की करें तो वहां पर वे काफी रन बना चुके हैं। इसी आधार पर उनक सेलेक्शन भारतीय टीम में हुआ था। लेकिन अब देखना होगा कि प्लेइंग इलेवन को लेकर रोहित शर्मा क्या फैसला करते हैं। वहीं दूसरे टेस्ट की टीम सेलेक्ट करने के लिए जब कमेटी बैठेगी तो कौन सी टीम चुनती है।

न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए श्रीलंकाई टीम घोषित

ओशादा फर्नांडो की हुई वापसी

नईदिल्ली,16 सितंबर 2024। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के खिलाफ 18 सितंबर से शुरू होने वाली टेस्ट सीरीज के लिए श्रीलंका क्रिकेट टीम का ऐलान किया गया है।धनंजय डी सिल्वा की कप्तानी में ओशादा फर्नांडो की लम्बे समय के बाद वापसी हुई है। उन्होंने मार्च 2023 में अपना पिछला टेस्ट मैच खेला था।वहीं दिमुथ करुणारत्ने, एंजेलो मैथ्यूज और दिनेश चांदीमल जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को बरकरार रखा गया है।

इंग्लैंड दौरे पर हिस्सा लेने वाले निशान मदुष्का को टीम से बाहर किया गया है। इंग्लैंड का दौरा करने वाले खिलाड़ियों में से ऑलराउंडर निसाला थारका और तेज गेंदबाज कसुन राजिथा को भी टीम से बाहर रखा गया है। न्यूजीलैंड ने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 में 6 में से 3 टेस्ट जीते हैं और 3 हारे हैं। कीवी टीम 50 प्रतिशत अंक के साथ फिलहाल तीसरे स्थान पर है।श्रीलंका ने मौजूदा चक्र में 7 में से 3 टेस्ट जीते हैं और 4 में शिकस्त झेली है। श्रीलंकाई टीम 42.86 प्रतिशत अंक के साथ फिलहाल पांचवें पायदान पर बरकरार हैंइस तालिका में भारतीय टीम शीर्ष पर मौजूद है। 18 सितंबर को पहले टेस्ट के बाद सीरीज का दूसरा और आखिरी मैच 26 सितंबर से खेला जाएगा। यह दोनों मैच गॉल अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेले जाएंगे।

टेस्ट सीरीज के लिए श्रीलंकाई टीमः- धनंजय डी सिल्वा (कप्तान), दिमुथ करुणारत्ने, पथुम निसांका, कुसल मेंडिस, एंजेलो मैथ्यूज, दिनेश चांदीमल, कामिंदु मेंडिस, सदीरा समरविक्रमा, ओशादा फर्नांडो, असिथा फर्नांडो, विश्वा फर्नांडो, लाहिरू कुमारा, प्रभात जयसूर्या, रमेश मेंडिस, जेफरी वेंडरसे और मिलन रथनायके।

धूम 4: विलेन बनकर आ रहे हैं सुपरस्टार सूर्या

फैंस बोले- अब रोलेक्स भाई कर देंगे अभिषेक बच्चन की नाक में दम

हिंदी सिनेमा की सबसे पॉप्युलर फ्रैंचाइज फिल्म धूम के तीन पार्ट आ चुके हैं। और अब इसके चौथे पार्ट के आने की खबरें तेज हो गई हैं। धूम 4 का हल्ला हाल ही में तब हुआ, जब अभिषेक बच्चन की एक फोटो वायरल हुई, जिसमें वह एकदम अलग अवतार में नजर आ रहे थे। सेलेब्स के हेयस्टाइलिस्ट आलिम हकीम ने इंस्टाग्राम पर शेयर की थी। साथ ही अब इसमें साउथ एक्टर सूर्या के होने की भी बातें सोशल मीडिया पर हो रही हैं। लोग कयास लगा रहे हैं कि वह इस मूवी में दिखाई देंगे।

यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी धूम के तीनों पार्ट में अभिषेक बच्चन और उदय चोपड़ा तो रहे ही हैं। उन्हें कोई रिप्लेस नहीं कर पाया है। मगर जिसके पीछे वह पूरी मूवी में भागते हुए दिखाई देते हैं, वो कास्ट हर बार नए एक्टर्स नजर आए हैं। जॉन अब्राहम-बिपाशा बसु, ऋतिक रोशन-ऐश्वर्या राय और आमिर खान-कटरीना कैफ के बाद अब सूर्या का नाम लिया जा रहा है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, धूम 4 पर अयान मुखर्जी, विजय कृष्ण आचार्य और श्रीधर राघवन के साथ आदित्य चोपड़ा काम कर रहे हैं। हालांकि इसके बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। मगर डेकन हेराल्ड के मुताबिक, सूर्या वाई आरएफ की इस मोस्ट अवेटेड फिल्म धूम 4 में विलेन के रोल में नजर आ सकते हैं। सोर्सेस के हवाले से लिखा गया है, मेकर्स ने एक रोल के लिए एक्टर से संपर्क किया है और अभी बात चल रही है।

वहीं, जब अभिषेक बच्चन की तस्वीर सामने आई तो उसे देख कुछ ने कहा था कि ये उन्होंने फिल्म किंग के लिए लुक लिया है और कुछ ने दावा किया था कि वह धूम 4 के लिए है। हालांकि लोगों को उनका ये नया अवतार खूब पसंद आया था। सभी ने खुलकर तारीफ की थी। अब इंटरनेट पर सूर्या के फिल्म में होने की खबर से फैंस बहुत खुश हैं। उन्होंने इंटरनेट पर इस बात का जश्न भी मनाना शुरू कर दिया है। लोगों ने सूर्या के फिल्म विक्रम के किरदार की क्लिप शेयर की है और कहा है कि अब रोलेक्स भाई, एसीपी जय दीक्षित की नाक में दम कर देंगे।

ऋतिक रोशन और सबा आजाद का नहीं हुआ है ब्रेकअप

ऋतिक रोशन और सबा आजाद पिछले दो साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। बीते दिनों ऐसी अफवाहें उड़ी थीं कि उनका ब्रेकअप हो गया है। पर अब दोनों एकसाथ गणपति पूजा में शामिल हुए और इन अफवाहों पर विराम लगा दिया है। ऋतिक और सबा का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।वायरल हो रहे एक इनसाइड वीडियो में ऋतिक रोशन और सबा आजाद को गणपति बप्पा के सामने एकसाथ आरती करते देखा जा सकता है। जहां ऋतिक ने सफेद टी-शर्ट और पजामा पहना हुआ था, वहीं सबा ने उनके साथ सिंपल पीले रंग के सलवार-सूट में नजर आईं। राकेश रोशन, पिंकी रोशन और सुनैना रोशन सहित रोशन परिवार के बाकी सदस्य भी इस अवसर पर मौजूद थे। गणपति बप्पा की विधि-विधान से पूजा-अर्चना करने के बाद सभी ने घर पर ही बने पानी के टैंक में इको-फ्रेंडली मूर्ति का विसर्जन किया।

राकेश रोशन ने भी भगवान गणेश के सामने एक तस्वीर शेयर की, जिसमें रोशन परिवार के सभी कर्मचारियों के साथ पोज दे रहा है। उन्होंने लिखा, %भगवा वस्त्र पहने लोग पुजारी नहीं, बल्कि हमारे केयर टेकर हैं, जो हमारा परिवार ही हैं। हमारी पूजा हमेशा उनकी भागीदारी के बिना अधूरी रहती है।

ऋतिक और सबा पिछले दो सालों से डेटिंग कर रहे हैं और कुछ दिनों पहले ऐसी खबरें वायरल हुई थीं कि दोनों अलग हो गए हैं। इनके ब्रेकअप की खबरें तब वायरल होने लगी, जब ऋतिक को कई जगहों पर अकेले स्पॉट किया गया। अंबानी की शादी में उनके साथ सबा नजर नहीं आई थीं। जबकि वो अक्सर उनके साथ होती हैं। हालांकि, अब इस कपल ने सभी अफवाहों पर विराम लगा दिया है।कुछ महीने पहले सबा ने खुलासा किया था कि ऋतिक के साथ डेटिंग ने उनकी प्रोफेशनल लाइफ पर काफी असर डाला है। उन्होंने सोशल मीडिया पर खुलासा किया था कि जब से उन्होंने धूम एक्टर संग अपने रिश्ते का ऐलान किया है, तब से उन्हें कम काम मिल रहा है। क्योंकि मेकर्स को लगता है कि अब उनकी काम करने में कोई दिलचस्पी नहीं है!

ऐश्वर्या राय के पास की खाली सीट पर बैठे चियान विक्रम

आराध्या संग एक्टर की बॉन्डिंग देख लोगों ने कहा-अमेजिंग

पोन्नियिन सेलवन में अपने रोल के लिए खूब सुर्खियां बटोर चुके मशहूर एक्टर चियान विक्रम और ऐश्वर्या राय एकसाथ एक अवॉर्ड फंक्शन में दिखे और इस मौके पर दोनों की कई सारी झलकियां सामने आई हैं। इन तस्वीरों में ऐश्वर्या और चियान के साथ आराध्या राय बच्चन भी दिख रही हैं। इन सबके अलावा चियान विक्रम की आराध्या के साथ भी प्यारी सी बॉन्डिंग कैमरे में खूब कैप्चर हुई है। दुबई में पिछले दिनों आयोजित एसआईआईएमए 2024 में ऐश्वर्या राय राय को बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड मिला है। वहीं चियान विक्रम ने पोन्नियिन सेलवन 2 में अपनी भूमिका के लिए बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड जीता। शनिवार शाम को आयोजित इस साउथ इंडियन इंटरनेशनल मूवी अवॉर्ड्स शो में ऐश्वर्या राय और चियान विक्रम की कुछ शानदार झलकियां सामने आई हैं। इस मौके पर ऐश्वर्या के साथ हमेशा की तरह उनकी बेटी आराध्या भी नजर आई। अवॉर्ड फंक्शन से जुड़े कुछ वीडियोज़ सोशल मीडिया पर नजर आ रहे हैं, जिसमें चियान और ऐश्वर्या एक-दूसरे के साथ हंसी-मजाक के कुछ पलों को जीते दिख रहे हैं। ऐश्वर्या को पोन्नियिन सेलवनः आईआई में अपने रोल के लिए एसआईआईएमए2024 में बेस्ट एक्ट्रेस का क्रिटिक्स अवॉर्ड जीता है। इस फंक्शन में आराध्या के साथ ही बैठी दिख रही हैं ऐश्वर्या राय। वहीं ऐश्वर्या के पास वाली सीट खाली होती है जहां चियान विक्रम आकर बैठ जाते हैं। इसके बाद ऐश्वर्या और चियान बातें करते हैं और कुछ तस्वीरों में एक्ट्रेस जोर से हंसती भी दिख रही हैं। वहीं कुछ झलकियों में चियान विक्रम आराध्या से बातें करते और उनपर स्नेह बरसाते दिख रहे हैं। इन झलकियों को लोग काफी पसंद कर रहे हैं और लोगों ने अमेजिंग, शानदार लिखकर रिएक्शन दिया है।

पोन्नियिन सेलवन से पहले ऐश्वर्या राय और चियान विक्रम ने रावणन में पहली बार काम किया था जिसे मणिरत्नम ने निर्देशित किया था। अब अवॉर्ड शो के बाद की इन झलकियों को देखकर लोग दोनों की एक रोमांटिक फिल्म की डिमांड करने लगे हैं। वहीं इस खास मौके पर ऐश्वर्या राय को अपने मोबाइल में कैप्चर करती दिखीं। ऐश्वर्या इस इवेंट में रेड कार्पेट पर अपनी बेटी का हाथ थामकर चलती दिखीं और उन्हें कैमरे के सामने किस भी किया।हाल ही में रणवीर अल्लाहबादिया के साथ एक बातचीत में चियान विक्रम ने ऐश्वर्या राय संग अपने ऑन स्क्रीन रोमांस पर कुछ बातें कही थी। उन्होंने कहा था कि उन्हें फिल्मों में ऐश्वर्या से प्यार करने को तो मिला, लेकिन वो कभी एक नहीं हो पाए।

प्रदेश की संक्षिप्त खबरें

सीएम साय आज श्रमिकों को देंगे बड़ी सौगात

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में प्रदेश के श्रमिकों के हित में अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। जिसका सीधा लाभ श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को मिल रहा है। उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने बताया कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर 'श्रमिक सम्मेलन' में 57 हजार से अधिक पंजीकृत श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को 49 करोड़ 43 लाख 52 हजार 294 रूपए केन्द्रीकृत डी.बी.टी. के माध्यम से वितरण करेंगे। यह सम्मेलन राजधानी के इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय जोरा के कृषि मंडपम में आयोजित होगा। श्रम विभाग के अधिकारियों ने आज यहां बताया कि प्रदेश के पंजीकृत श्रमिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को श्रम विभाग के अधीन छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सर्निन्माण कर्मकार कल्याण मंडल के अंतर्गत 47 हजार 726 निर्माण श्रमिकों 38 करोड़ 37 लाख 10 हजार 652 रूपए, छत्तीसगढ़ असंगठित कर्मकार राज्य सामाजिक सुरक्षा मंडल अंतर्गत 6873 श्रमिकों को 9 करोड़ 86 लाख 58 हजार 500 रूपए एवं छत्तीसगढ़ श्रम कल्याण मंडल अंतर्गत 2496 श्रमिकों को 1 करोड़ 19 लाख 83 हजार 142 रूपए की राशि डी.बी.टी. के जरिए वितरण करेंगे। इस तरह कुल 57 हजार 95 श्रमिकों को कुल राशि 49 करोड़ 43 लाख 5 हजार 229 रूपये का वितरण केन्द्रीयकृत डी.बी.टी. के माध्यम से किया जाएगा।

गौ तस्करी मामले में आरोपियों को रेड की सूचना देने वाला आरक्षक गिरफ्तार

दुर्ग,16 सितम्बर 2024(ए)। जिले के पाटन क्षेत्र में गौ तस्करी के मामले में अपने ही सिपाही पर पुलिस विभाग ने बड़ी कार्रवाई की है। दरअसल 10 सितंबर को पुलिस ने गौ तस्करी की सूचना पर एक फॉर्म हाउस पर रेड मारी थी, लेकिन पुलिस के पहुंचने से पहले पाटन थाना के आरक्षक डिलेश्वर पठारे ने गौ तस्करों को रेड की सूचना दे दी। इसके चलते आरोपी मौके से फरार हो गए। वरिष्ठ अधिकारियों ने गौ तस्करी के मामले में सिपाही डिलेश्वर पठारे के खिलाफ अपराध दर्ज कर कार्रवाई करते हुए उसे जेल भेजा दिया है।

राजधानी में नहीं थम रही चाकूबाजी

दूसरे दिन भी तेलीबांधा तालाब पर दिनदहाड़े युवती को घोपा चाकू

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। राजधानी रायपुर में चाकूबाजी की घटनाएं थमने का नाम नहीं ले रही हैं. ताजा घटना तेलीबांधा थाना क्षेत्र की है, जहां तेलीबांधा तालाब पर दिनदहाड़े एक युवक ने युवती पर चाकू से हमला कर दिया। युवती पर जानलेवा हमला करने के बाद आरोपी युवक तेलीबांधा तालाब में कूद गया। इस घटना के बाद पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। घटना की सूचना पर पुलिस और एसडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंच गई है। एसडीआरएफकी टीम ने आरोपी का रेस्क्यू किया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर पूछताछ शुरू कर दिया है।

वसूली ऑडियो मामले में सस्पेंड, शिक्षक नपे

बीजापुर ,16 सितम्बर 2024(ए)। छात्रावास अधीक्षिका के पद पर बने रहने के लिए शिक्षक सह मंडल संयोजक ने अधीक्षिका से रूपयो की मांग की। दोनों के मध्य रूपयो के लेनदेन की बातचीत का

ऑडियो वायरल हो गया। वायरल ऑडियो के आधार पर कलेक्टर संबित मिश्रा ने मंडल संयोजक का प्रभात संभाल रहे शिक्षक एलबी कैलाश चंद्र रामटेके को निलंबित कर दिया है। वही छात्रावास अधीक्षिका लक्ष्मी पदम को नोटिस जारी कर दो दिनों में जवाब मांगा है। लक्ष्मी पदम छात्रावास अधीक्षिका के पद पर विशिष्ट जाति जनजाति कन्या छात्रावास विकासखंड बीजापुर जिला बीजापुर के पद पर पदस्थ हैं। उनसे छात्रावास अधीक्षक के पद पर बने रहने के लिए बीजापुर विकासखंड के प्रभारी मंडल संयोजक कैलाश चंद्र रामटेके के द्वारा पैसों की मांग की गई।

लाखों की किताबें कैसे पहुंची कबाड़ में

» आईएएस राजेन्द्र कटारा की अगुवाई वाली कमेटी करेगी जांच

» पूर्व विधायक विकास उपाध्याय ने किया था खुलासा

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। राजधानी रायपुर में पश्चिम क्षेत्र के विधायक विकास उपाध्याय ने सिलयारी में एक पेपर मिल के गोदाम में वर्तमान सत्र की किताबें कबाड़ के रूप में पड़े होने की जानकारी मीडिया को दी थी, जिसके बाद किताबों की छपाई कराने वाली पाठ्य पुस्तक निगम में हड़कंप मच गया। अब इस मामले की जांच के आदेश देते हुए आईएएस अफसर राजेंद्र कटारा के नेतृत्व में टीम गठित की गई है।

कैसे कबाड़ के भाव बेच दी गईं किताबें

विकास उपाध्याय ने इस मामले की सूचना मिलने के बाद सिलियरी स्थित रियल पेपर मिल फैक्ट्री के गोदाम के अंदर जाकर किताबों का ढेर देखा। इसका अवलोकन करने पर पता चला कि किताबें इसी सत्र की हैं और अच्छी कंडीशन में हैं। उन्होंने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि छत्तीसगढ़ में सत्र शुरू हुए अभी कुछ ही महीने बीते हैं और किताबें छात्रों को पूरी तरह मिल भी नहीं पाई हैं। ऐसे में किताबें बांटने के पहले ही उन्हें कबाड़ में बेच दिया गया है, इन किताबों को उपयोग में लाया जा सकता है, लेकिन इन्हें रद्दी बताकर बेचा जा चुका है।

भ्रष्टाचार का ज्वलंत उदहारण

इस मामले को ऊजागर करते हुए विकास उपध्याय ने कहा कि यह शिक्षा और बच्चों के भविष्य के साथ भारी भ्रष्टाचार का ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने कहा कि यह किताबें सर्व शिक्षा अभियान और छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित की गई हैं, जो छात्रों को निशुल्क दी जानी थीं। लेकिन इसके स्थान पर इन्हें कबाड़ में फेंक दिया गया है। इससे लाखों-करोड़ों रुपये का राजस्व नुकसान प्रदेश को हुआ है। उन्होंने बड़ा भ्रष्टाचार होने की आशंका व्यक्त करते हुए मामले की जांच की मांग की है।

छत्तीसगढ़ शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
:: मंत्रालय ::
महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर
–:: आदेश ::–

नवा रायपुर अटल नगर, दिनांक 16/09/2024

क्रमांक एफ 1–16/2024/20–दो :: दैनिक समाचार पत्र दिनांक 16/09/2024 के अंक में–मौजूदा शिक्षा सत्र की लाखों किताबें कबाड़ में सिलयारी स्थित रियल बोर्ड पेपर मिल में रद्दी के भाव में बेचने की खबर प्रकाशित हुई है।

2/ राज्य शासन एतद् द्वारा, उक्त प्रकाशित खबर के आधार पर प्रकरण की विस्तृत जांच हेतु निम्नानुसार समिति का गठन करता है :–

(01) श्री राजेन्द्र कटारा (आई.ए.एस.), प्रबंध संचालक, छ0ग0 पाठ्य पुस्तक निगम, रायपुर
(02) डॉ0 योगेश शिवहरे, अतिरिक्त संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छ0ग0 रायपुर
(03) श्री राकेश पाण्डेय, संभागीय संयुक्त संचालक, शिक्षा संभाग, रायपुर
(04) श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, महाप्रबंधक, छ0ग0 पाठ्य पुस्तक निगम, रायपुर
(05) कलेक्टर, जिला रायपुर द्वारा नामांकित जिला प्रशासन के अधिकारी

3/ उक्त समिति समाचार पत्र में प्रकाशित खबर की विस्तृत जांच कर, प्रतिवेदन शासन को अतिशीघ्र प्रस्तुत करेगी।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार
(आर.पी. वर्मा)
अवर सचिव
छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग

शिक्षा विभाग ने दिया जांच का आदेश

मौजूदा शिक्षा सत्र की लाखों किताबें कबाड़ में रद्दी के भाव बेचने की खबर प्रकाश में आने के बाद स्कूल शिक्षा विभाग के अवर सचिव आरपी वर्मा ने आईएएस व प्रबंध संचालक, छग पाठ्य पुस्तक निगम, रायपुर राजेंद्र कटारा की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय जांच दल का गठन किया है। जांच रिपोर्ट मिलने के बाद स्कूल शिक्षा विभाग आगे की कार्रवाई करेगा।

किताबों की मांग और आपूर्ति के ऑडिट की है जरुरत

छत्तीसगढ़ में स्कूलों के लिए सरकारी किताबें छपवाने की जिम्मेदारी पाठ्य पुस्तक निगम की होती है। निगम के ऊपर लगभग हर वर्ष किताबों की छपाई मेें गड़बड़ी के आरोप लगते रहे हैं। वहीं जिलों म अक्सर इन किताबों को कबाड़ में बेचे जाने की खबरें भी प्रकाश में आती हैं। मगर संभवतः पहली बार ऐसा मामला पकड़ में आया है, जिसमें वर्तमान सत्र की ही किताबें राजधानी में ही सीधे पेपर मिल में बेच दी गई हैं। ऐसा कैसे संभव हुआ इसकी गंभीरता से जांच की जरुरत है।

दरअसल सभी सरकारी और गैर सरकारी स्कूलों को डाइस कोड आबंटित हैं, और इनसे हर वर्ष कक्षावार बच्चों की संख्या और किताबों की डिमांड का आंकड़ा मंगाया जाता है। जानकर बताते हैं कि स्कूलों द्वारा अमूमन बच्चों का सही आंकड़ा दिया जाता है, मगर पाठ्य पुस्तक निगम के जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा निर्धारित मात्रा से काफी ज्यादा पुस्तकें छपवा ली जाती हैं। ऐसा करके करोड़ों रूपये प्रकाशकों को अतिरिक्त भुगतान किया जाता है और इसमें कमीशन का खेल हो जाता है। बाद में इन किताबों को बचा हुआ बताकर कबाड़ के भाव में बिकवा दिया जाता है। यह खेल स्कूलों में मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था में की जाने वाली गड़बड़ी की तरह ही होता है। जहां बच्चों की संख्या ज्यादा बताकर अधिक राशन खर्च करना दिखाया जाता है और कमीशनखोरी की जाती है।

पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा स्कूलों में डिमांड के आधार पर कितनी किताबें हर वर्ष छपवाई जाती हैं, इसका ऑडिट कराया जाये तो सारा सच उजागर हो जायेगा, मगर जिस तरह ताजा मामले की जांच कमेटी में विभाग के जिम्मेदार लोगो को भी शामिल किया गया है, उससे सच कभी सामने आने वाला नहीं है, और मामले को यूं ही गोलमोल करके रिपोर्ट तैयार कर दी जाएगी। कायदे से दूसरे विभाग और लेखा से जुड़े वरिष्ठ अधिकारियों को जांच टीम में शामिल किया जाये तो सच उजागर होने की उम्मीद की जा सकती है।

रिपोर्ट के बाद होगी आगे की कार्रवाई

जांच दल मंगलवार से अपना काम प्रारंभ कर देगा। जांच दल की रिपोर्ट और अनुशंसा के बाद स्कूल शिक्षा विभाग आगे की कार्रवाई करेगा। बहरहाल जांच दल की ओर नजरें टिकी हुई है। जांच में कौन-कौन जिम्मेदारों का नाम सामने आता है। रद्दी के भाव किताबों को बेचने के लिए पाठ्य पुस्तक निगम के गोदामों से किताब कबाड़ी के पास कैसे पहुंची। इसमें कौन-कौन सहभागी हैं,जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जांच दल का फोकस रहेगा।

रायपुर से विशाखापट्टनम के लिए वंदे भारत ट्रेन हुई रवाना

» पीएम मोदी ने वर्चुअली दिखाई हरी झंडी

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। रायपुर रेलवे स्टेशन से विशाखापट्टनम के लिए वंदे भारत ट्रेन का ऐतिहासिक लोकार्पण किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल माध्यम से ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। इस मौके पर राज्यपाल रमेन डेका, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, विजय बघेल, और कई विधायक गण भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इसी के साथ छत्तीसगढ़ को एक और वंदेभारत की सौगात मिल गई।

लोकार्पण कार्यक्रम में राज्य के प्रमुख नेता और विशिष्ट अतिथियों ने हिस्सा लिया। राज्यपाल रमेन डेका ने वंदे भारत ट्रेन को छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के बीच कनेक्टिविटी को मजबूत करने का कदम बताया। सांसद बृजमोहन अग्रवाल और विजय बघेल ने ट्रेन की सुविधा और देश के यातायात तंत्र में इसके योगदान की सराहना की।

छात्र-छात्राएं और रेलवे कर्मचारी बने यात्रा का हिस्सा

वंदे भारत ट्रेन की इस विशेष यात्रा में स्कूली छात्र-छात्राएं, स्काउट गाइड, रेलवे कर्मचारी, और आंध्र एसोसिएशन के नागरिक भी सवार हुए। बता दें कि यह ट्रेन हाई-स्पीड, आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है, जो यात्रियों को तेज और आरामदायक यात्रा का अनुभव प्रदान करेगी।

दे भारत ट्रेनः क्षेत्रीय कनेक्टिविटी का नया अध्याय

रायपुर से विशाखापट्टनम के बीच शुरू हुई इस ट्रेन से न केवल दोनों राज्यों के बीच व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि आम नागरिकों को भी एक विश्वस्तरीय यात्रा का अनुभव प्राप्त होगा। यह ट्रेन हाई-स्पीड के साथ आधुनिक सुविधाओं से लैस है, जिससे यात्रियों को सुखद और तेज यात्रा का अनुभव मिलेगा।

वृद्धाश्रम की बुजुर्ग महिलाओं को कराई 'वंदे भारत' की सैर

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने सराहनीय पहल करते हुए वृद्धाश्रम में रहने वाली बुजुर्ग महिलाओं को छत्तीसगढ़ को बतौर सौगात मिले दूसरे वंदे भारत एक्सप्रेस की निःशुल्क सैर कराई। वंदे भारत एक्सप्रेस में पहली बार सफर कर रही बुजुर्ग महिलाओं की खुशी देखते ही बन रही थी। वंदे भारत एक्सप्रेस का सफर कर रही इन बुजुर्ग महिलाओं से लल्लूराम डॉट कॉम के डिजिटल हेड प्रतीक चौहान से बात की।केवल वृद्धाश्रम की महिलाओं को ही नहीं बल्कि माना कैंप स्थित सरस्वती शिशु मंदिर की छात्राओं को भी वंदे भारत एक्सप्रेस का सफर कराया गया। इनमें से एक छात्रा तो ऐसी थी, जो पहली बार ट्रेन का सफर कर रही थी। इनके साथ शामिल शिक्षक भी पहली बार वंदे भारत एक्सप्रेस का सफर कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वंदे भारत में सफर की खुशी का इजहार शब्दों में करना बहुत ही मुश्किल है।

सेवानिवृत्ति के बाद छह महीने में ही हो सकेगी सरकारी राशि की वसूली

बिलासपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने सेवानिवृत्त सरकारी स्कूल शिक्षक ने सेवानिवृत्ति के दो साल बाद जारी वसूली नोटिस को अवैध बताया है। हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया है कि किसी सरकारी कर्मचारी से नेगेटिव बैलेंस की राशि वसूलने के लिए महालेखाकार कार्यालय को सेवानिवृत्ति के छह महीने के भीतर ही कार्रवाई करनी होगी। यदि इस अवधि के बाद वसूली करनी हो तो इसके लिए कानूनी प्रक्रिया अपनाते हुए सिविल अदालत का रुख करना पड़ेगा।

न्यायमूर्ति संजय के. अग्रवाल की एकल पीठ ने अपने फैसले में कहा, प्रावधानों के अनुसार, सेवानिवृत्त कर्मचारी से वसूली योग्य सरकारी राशि सेवानिवृत्ति के छह महीने के भीतर समायोजित की जानी चाहिए। यदि इस अवधि के भीतर कोई दावा नहीं किया जाता है, तो यह माना जाएगा कि कर्मचारी के खिलाफ कोई सरकारी दावा बकाया नहीं है। हालांकि, पानी के बिल और मकान किराए की राशि को एक साल के भीतर वसूला जा सकता है। इसके बाद किसी भी वसूली के लिए कानूनी प्रक्रिया अपनानी होगी।

क्या है मामला

याचिकाकर्ता सेवानिवृत्त सरकारी स्कूल के प्रधानाध्यापक ने अपने सामान्य भविष्य निधि (जीपीएफ) खाते से नेगेटिव बैलेंस की वसूली को चुनौती दी थी। उन्होंने 31 मई 2008 को राजनांदगांव जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सोमाटोला से सेवानिवृत्ति ली थी। वर्ष 2010 में उन्हें उनके जीपीएफ खाते में 2 लाख 85 हजार 711 रुपये का नेगेटिव बैलेंस होने की जानकारी दी गई, जिसे बाद में 2 लाख 57 हजार 114 रुपये पर संशोधित किया गया। याचिकाकर्ता ने इस वसूली के खिलाफ रिट याचिका दायर की, यह तर्क देते हुए कि यह नियमों का उल्लंघन है।

छत्तीसगढ़ में सीमेंट के दाम घटे

जल्द वापस होंगे पुराने रेट

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ से एक बड़ी खबर सामने आई है, जहां प्रदेश की सीमेंट कंपनियों ने हाल ही में बढ़े हुए दामों में कमी की है। कुछ समय पहले सीमेंट की कीमतों में भारी वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जनता में नाराजगी फैल गई थी। अब यह राहत मिली है कि सीमेंट की कीमतें कम कर दी गई हैं।

बृजमोहन अग्रवाल ने उठाया सवाल

रायपुर के सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने सीमेंट की बढ़ी कीमतों को लेकर अपनी ही सरकार पर सवाल उठाए थे। उन्होंने पूछा कि जब मजदूरी नहीं बढ़ी तो सीमेंट के दाम क्यों बढ़ाए गए। साथ ही, कांग्रेस ने भी इन बढ़ी हुई कीमतों के खिलाफ प्रदर्शन किया था।

हाल ही में बढ़ी थी कीमतें

3 सितंबर 2024 को प्रदेश में सीमेंट के दाम 260 रुपये से बढ़ाकर 310 रुपये प्रति बोरी कर दिए गए थे। वहीं, सरकारी प्रोजेक्ट्स के लिए मिलने वाली सीमेंट की कीमत भी 210 रुपये से बढ़ाकर 260 रुपये प्रति बोरी कर दी गई थी, जिससे कई परियोजनाओं पर असर पड़ा।

सीमेंट की कीमतों में हुई कमी पर बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि 45 रुपये प्रति बोरी की कमी से जनता को राहत मिलेगी, लेकिन उन्होंने आग्रह किया कि पुरानी दरों को ही जल्द से जल्द लागू किया जाए ताकि गरीब और मध्यम वर्ग को अपने आवास निर्माण में कोई दिक्कत न हो।

सरकारी काम भी हो रहे थे प्रभावित

बृजमोहन ने अपने पत्र में प्रधानमंत्री आवास योजना और प्रदेश के अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स जैसे सड़क, पुल, भवन और स्कूल-कॉलेज निर्माण पर पड़ रहे असर का जिक्र किया। छत्तीसगढ़ में हर महीने करीब 8 करोड़ बैग सीमेंट का उत्पादन होता है, लेकिन कीमतें बढ़ने से कई सरकारी काम प्रभावित हो रहे थे।

सचिन पायलट,चरणदास महंत,दीपक बैज की एयरपोर्ट में लंबी चर्चा...बना चर्चा का विषय

रायपुर,16 सितम्बर 2024(ए)। प्रदेश कांग्रेस की राजनीति में नई तिकड़म दिख रही है। राजनीतिक गलियारों से छनकर ख़बर आयी है कि चरणदास महंत और दीपक बैज के साथ मिलकर प्रदेश की राजनीतिक नहीं हो रहे बदलाव को और पार्टी के परफॉर्मेंस के लिए पर दीपक बैज के साथ मिलकर प्रभारी महामंत्री सचिन पायलट ने आधा घंटे से ज़्यादा अकेले में गुफ़्तगू की। संगठन के बदलाव की बहार को देखते हुए इस गुफ़्तगू को महत्वपूर्ण माना जा रहा है और भूपेश बघेल के गुट को एक बहुत बड़े धक्के के रूप में देखा जा रहा है राजनीतिक पंडितों का कहना है कि भूपेश का गुट अब हल्का हो चला है जिससे पार्टी संगठन में अब वो अस्तित्व नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। वहीं दूसरी ओर एयरपोर्ट से तत्काल चरणदास महंत और दीपक बैज के देवेंद्र नगर स्थित सरकारी निवास में गुफ़्तगू करने और अपनी बातों को पूरा करने बैठे हुए हैं और ख़बर लिखे जाने तक दोनों नेताओं की बैठक चल रही है।

सचिन पायलट को विदा करने के लिए कुछ प्रमुख कांग्रेसी एयरपोर्ट गए थे। आगामी कुछ महीनों में दक्षिण विधानसभा उपचुनाव, नगर पालिका चुनाव और पार्टी संगठन में बदलाव ये तीन महत्वपूर्ण विषय है।

दोपहर की बैठक में हुई थी ये चर्चा

छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रमुख सचिन पायलट ने राज्य के राजनीतिक हालात और पार्टी की भविष्य की रणनीति पर बयान दिया. उन्होंने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेता राज्य भर में यात्रा करेंगे और ब्लॉक, जिला और विभाग स्तर पर कार्यकर्ताओं से सीधे बातचीत करेंगे। पायलट ने कहा कि संगठन में अगर कमियां हैं तो उन्हें दूर किया जाएगा और खाली पदों को भरने के साथ ही काम नहीं करने वाले पदाधिकारियों को भी हटाया जाएगा और मौजूदा लोगों को जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। उन्होंने इस दौरे और महोत्सव से पहले संगठनात्मक बदलाव के भी संकेत दिये। पायलट ने राज्य में बढ़ती अपराध दर की ओर भी सरकार का ध्यान दिलाया। सचिन पायलट ने रायपुर में कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में तीन महत्वपूर्ण बैठकों में भाग लिया, जहां उन्होंने वरिष्ठ नेताओं के साथ रायपुर दक्षिण उपचुनाव और एक-पर-एक बैठकों पर चर्चा की। दक्षिण रायपुर के लिए पार्टी की रणनीति पर पायलट ने कहा कि ब्लॉक से लेकर प्रदेश स्तर तक सभी की जिम्मेदारियां तय कर दी गई हैं।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)